WOH HUM ME SE NAHI (HINDI)

वोह हम में से नहीं

(मअ़ 38 ह़िकायात)



सुन्नत से बे रग़्बती करने वाला
हासिद और चुग़ल ख़ोर
बे सब्री करने वाला

मुसलमान को धोका देने वाला
पड़ोसी का ह़क़ ज़ाएअ़ करने वाला
बुराई से मन्अ़ न करने वाला
कहानत करने-करवाने वाला
लोगों का माल लूटने वाला

औ़रत को उस के ख़ावन्द के ख़िलाफ़ उभारने वाला
जादू करने वाला
सलाम का जवाब न देने वाला
नाह़क़ क़ब्ज़ा जमाने वाला
ख़ुश इल्हानी से क़ुरआन न पढ़ने वाला

(دعوتِ اسلامی)
शो'बए इस्लाही कुतुब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ़** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : *ऐ* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! *हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عساكر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

“वोह हम में से नहीं” का हिन्दी रस्मुल ख़त़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **“अल मदीनतुल इल्मिय्या”** ने येह किताब **‘उर्दू’** ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **‘हिन्दी’ रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

नोट : इस्लामी बहनों को डायरेक्ट राबित़ा करने की इजाज़त नहीं है।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	़ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

✍ -: राबित़ा :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूदे पाक लिखने की बरकत

हज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास उक़्लीशी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى को किसी ने ख़्वाब में देखा कि गोया आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बड़े नाज़ो अन्दाज़ के साथ जन्नत में चहल क़दमी फ़रमा रहे हैं। देखने वाले ने पूछा : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह मक़ाम कैसे पाया ? जवाब दिया : अपनी किताब "अल अरबईन" में कसरत से दुरूद लिखने की वज्ह से।

(القول البديع،الباب الخامس،الصلاة عليه عند كتابة اسمه......الخ،ص٤٦٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1) जो ख़ुश इल्हानी से क़ुरआन न पढ़े वोह हम से नहीं

ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَّمْ يَتَغَنَّ بِالْقُرْاٰن या'नी जो ख़ुश इल्ह़ानी से क़ुरआन न पढ़े वोह हम से नहीं।

(بخاری،كتاب التوحيد،باب قول الله تعالى وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ...الخ،٤/٥٨٦،حديث:٧٥٢٧)

ख़ुश आवाज़ी क़ुरआन का ज़ेवर है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : يَتَغَنَّ या तो غِنَاءٌ से बना है ब मा'ना ख़ुश इल्ह़ानी और अच्छे लहजे से

पढ़ना या غَنَا से बना ब मा'ना बे परवाही–बे नियाज़ी या'नी जो शख़्स कुरआन शरीफ़ खुश इल्हानी से न पढ़े वोह हमारे त़रीके़ से ख़ारिज है। मा'लूम हुवा कि बुरी आवाज़ वाला भी ब क़दरे त़ाक़त उ़म्दगी से कुरआन शरीफ़ पढ़े कि खुश आवाज़ी कुरआने करीम का ज़ेवर है, जिस से तिलावत में कशिश पैदा होती है लोगों के दिल माइल होते हैं। इस लिये येह तब्लीग़ का ज़रीआ़ है या जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआन का इ़ल्म दे और वोह लोगों से बे नियाज़ न हो जाए बल्कि अपने को उन का मोह़ताज समझे वोह हमारे त़रीके़ या हमारी जमाअ़त से ख़ारिज है आ़लिम सिर्फ़ **अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم) का मोह़ताज है और बाक़ी मख़्लूक़ आ़लिमे दीन की ह़ाजतमन्द है, इस लिये मा'लूम हुवा कि कुरआन पढ़ कर भीक मांगना या उ़लमा का मालदारों के दरवाज़ों पर ज़िल्लत से जाना ममनूअ़ है, **अल्लाह** तआ़ला उ़लमाए दीन को किफ़ायत भी दे क़नाअ़त भी।

(मिरआतुल मनाजीह़, 3/266)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"वोह हम में से नहीं" का मत़लब

ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : इस से मुराद येह है कि वोह हमारी सीरत पर अ़मल पैरा नहीं, हमारी दी हुई हिदायत पर गामज़न नहीं और हमारे अख़्लाक़ से आरास्ता नहीं।

(شرح أبی داود للعینی،کتاب الصلاۃ،باب کیف یستحب الترسل فی القرآن،٥/٣٨٥،تحت الحدیث:١٤٣٩)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن इस त़रह़ की अह़ादीस का मफ़्हूम बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : हमारी जमाअ़त से या हमारे त़रीक़े वालों से या हमारे प्यारों से नहीं या हम उस से बेज़ार हैं वोह हमारे मक़्बूल लोगों में से नहीं, येह मत़लब नहीं कि वोह हमारी उम्मत या हमारी मिल्लत से नहीं क्यूंकि गुनाह से इन्सान काफ़िर नहीं होता, हां ! जो ह़ज़रात अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की तौहीन करे वोह इस्लाम से ख़ारिज है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/560)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआने करीम को अपनी आवाज़ों से ज़ीनत दो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : क़ुरआने करीम को अपनी आवाज़ों से ज़ीनत दो।

(ابن ماجہ ،کتاب الصلاۃ ، باب فی حسن الصوت بالقرآن،۲/۱۳۱،حدیث:۱۳۴۲)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी ख़ुश इल्ह़ानी और बेहतरीन लहजे ग़मगीन आवाज़ से तिलावत करो और हर ह़र्फ़ को उस के मख़रज से सह़ीह़ अदा करो मगर गा कर तिलावत करना जिस से मद-शद में फ़र्क़ आ जाए ह़राम है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/269)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मैं छे चीज़ों से ख़ौफ़ज़दा हूं

हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : मैं छे चीज़ों से ख़ौफ़ज़दा हूं : (1) बेवुक़ूफ़ों की हुक्मरानी (2) रिश्वत के फ़ैसलों (3) सिपाहियों की कसरत (4) क़त्ए़ रेह़्मी (5) ऐसी क़ौम से जो कुरआन को मूसीक़ी के त़र्ज़ पर पढ़ेगी, और (6) क़त्ले नाह़क़। (مسند احمد، ۹/۲۰۲ حدیث: ۲٤۰۲۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ुश आवाज़ी के साथ कुरआन पढ़ने की एह़तियातें

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : कुरआने अ़ज़ीम ख़ुश इल्ह़ानी से पढ़ना जिस में लहजा ख़ुशनुमा दिलकश पसन्दीदा, दिल आवेज़, ग़ाफ़िल दिलों पर असर डालने वाला हो, और مَعَاذَ اللّٰہ ★ रिआ़यते औज़ाने मूसीक़ी के लिये हैअते नज़्मे कुरआनी को बदला न जाए ★ ममदूद का मक़्सूर, मक़्सूर का ममदूद न बनाया जाए ★ हुरूफ़े मद को कसीर फ़ाह़िशे कशिश जिसे इस्तिलाहे मूसीक़ियान में तान कहते हैं न दी जाए ★ ज़मज़मा पैदा करने के लिये बे मह़ल ग़ुन्ना व नून न बढ़ाया जाए, ग़रज़ तर्ज़े अदा में तब्दील व तह़रीफ़ राह न पाए, बेशक जाइज़ व मरग़ूब बल्कि शरअ़न मह़बूब व मन्दूब बल्कि ब ताकीद अकीद मत़लूब आ'ला दरजे की है, ज़मानए सह़ाबा व ताबेईन व अइम्मए दीन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِیْن से आज तक इस के जवाज़ व इस्तिह़सान पर इजमाए़ उ़लमा है। (फ़तावा रज़विय्या, 23/355)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिस की आवाज़ अच्छी न हो ?

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हर शख़्स की आवाज़ उस के लिहाज़ से होगी, एक ही शख़्स अपनी आवाज़ बुरी भी निकाल सकता है और कुछ अच्छी भी तो कुरआन की तिलावत में अच्छी आवाज़ इस्ति'माल करो येह मत़लब नहीं कि जिस की आवाज़ अच्छी न हो वोह तिलावते कुरआन ही न करे।

(मिरआतुल मनाजीह़, 3/274)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

औरत का अजनबियों के सामने तिलावत करना

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : औरतों को अज़ान देना, तक्बीर कहना, ख़ुश इल्हानी से अजनबियों के सामने तिलावते कुरआन करना सब ममनूअ़ है, औरत की आवाज़ भी सित्र है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/445) मुफ़्ती साहिब एक और जगह लिखते हैं : जो औरत क़ारिया हो वोह भी अपनी क़िराअत औरतों को सुनाए मर्दों को न सुनाए कि औरत की आवाज़ का भी पर्दा है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/59)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कुरआन पढ़ने का त़रीक़ा

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ कुरआन वालो ! कुरआन को तक्या न बनाओ और दिन रात इस की तिलावत करो जैसा कि

तिलावत का ह़क़ है और क़ुरआन का ए'लान करो, इसे ख़ुश आवाज़ी से पढ़ो इस के मा'ना में ग़ौर करो ताकि तुम कामयाब हो और इस का सवाब जल्दी न मांगो कि इस का सवाब बहुत है।

(شعب الایمان،باب فی تعظیم القرآن،فصل فی ادمان تلاوتہ،۲/۳۵۰،حدیث:۲۰۰۷)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी क़ुरआन शरीफ़ पर सर रख कर न लेटो कि येह बे अदबी है। क़ुरआन से बे फ़िक्र न हो जाओ कि इस की तिलावत में सुस्ती करो, इस पर अ़मल न करो। दूसरे मा'ना क़वी हैं जैसा कि अगले मज़्मून से ज़ाहिर है। ("जैसा कि इस की तिलावत का ह़क़ है" के तह़्त मुफ़्ती साह़िब رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं :) इस जुम्ले में दो हुक्म हैं हमेशा क़ुरआन पढ़ना और दुरुस्त पढ़ना, क़ुरआन का ह़क़्क़े तिलावत येह है कि इस की तिलावत सह़ीह़ त़रीक़े से करे और इस पर अ़मल करे रिज़ाए इलाही के लिये पढ़े न कि मह़्ज़ लोगों को ख़ुश करने के लिये। रब तआ़ला फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ (پ۲۲،فاطر:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो **अल्लाह** की किताब पढ़ते और नमाज़ क़ाइम रखते हैं।*

यहां (साह़िबे) मिर्क़ात ने फ़रमाया कि क़ुरआने करीम पर तक्या लगाना इस की त़रफ़ पाउं फैलाना इस पर कोई और किताब रखना इस की त़रफ़ पीठ करना इसे फैंकना वग़ैरा सख़्त मन्अ़ है[1]

---

1 : फ़तावा अमजदिय्या जिल्द 4, सफ़ह़ा 441 पर है : जान बूझ कर क़ुरआने पाक को ज़मीन पर फैंकना कुफ़्र है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स.194)

कुरआने करीम को चूमना, सर पर रखना मुस्तह़ब है, इस से फ़ाल निकालना ह़राम है। (मुफ़्ती साह़िब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद लिखते हैं) कुरआने करीम खुश इल्ह़ानी से पढ़ो और कुरआन के ज़रीए लोगों से ग़नी व बे नियाज़ हो जाओ (लफ़्ज़े तग़न्नू) गाने के मा'ना में नहीं कि कुरआन शरीफ़ गा कर पढ़ना ह़राम है। तदब्बुरे कुरआन उ़लमा का और है बे इ़ल्म लोगों का कुछ और ! उ़लमा तो इस के मा'ना व अह़काम में ग़ौर करें अ़वाम येह समझ कर पढ़ें कि येह वोह अल्फ़ाज़ हैं जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और तमाम सह़ाबा (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) ने पढ़े थे, اَللّٰہُ اَکْبَر ! हमारे कहां नसीब कि वोह अल्फ़ाज़ हमारी ज़बान पर भी आएं। (मुफ़्ती साह़िब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद लिखते हैं) तिलावते कुरआन, ता'लीमे कुरआन, तजवीदे कुरआन का सवाब आख़िरत में मिलेगा जो तुम्हारे इ़ल्मो फ़ेहम से वरा है तुम सिर्फ़ यहां ही इस का सवाब न लो या'नी दुन्या को इसी का मक़्सद न बना लो। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/274)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुरआने करीम दुरुस्त पढ़ा जाए

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : बिला शुबा इतनी तजवीद जिस से तसह़ीह़े हुरूफ़ हो और ग़लत़ ख़्वानी से बचे फ़र्ज़े ऐन है।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, 6/343)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुरआने करीम सीखने वालों के ह़ल्के़ बना देते

जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में नमाज़े फ़ज्र के बा'द लोग क़ुरआन सीखने के लिये जम्अ़ हो जाते, आप उन लोगों के दस दस अफ़राद पर मुश्तमिल ह़ल्के़ बना देते और हर ह़ल्के़ पर एक निगरान मुक़र्रर फ़रमाते जो उन को पढ़ाता और उन की ग़लतियों की इस्लाह़ करता । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद मेह़राब में तशरीफ़ फ़रमा हो कर उन्हें मुलाह़ज़ा फ़रमाते, अगर किसी निगरान को कोई मस्अला दरपेश होता तो वोह आप की ख़िदमत में रुजूअ़ करता । (معرفۃ القراء الکبار،۱/۴۱)

ऊंचा सुनने के बा वुजूद ग़लती पकड़ लिया करते

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ालून رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ऊंचा सुनते थे लेकिन इस के बा वुजूद आप तिलावत करने वाले के होंटों को देख कर उस की ग़लती की निशान देही फ़रमा दिया करते थे ।

(سیر اعلام النبلاء،۹/۷۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी और ता'लीमे क़ुरआन

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त क़ुरआने पाक की ता'लीम को आ़म करने के लिये अन्दरून व बैरूने मुल्क ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा के कसीर मदारिस बनाम "**मद्रसतुल मदीना**" क़ाइम हैं । पाकिस्तान में **हज़ारों** मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों को ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की

मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है। इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ मसाजिद वग़ैरा में उ़मूमन बा'द नमाज़े इ़शा हज़ारहा **मदारिसुल मदीना** बालिग़ान की 41 मिनट के लिये तरकीब होती है जिन में बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से ह़ुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कु़रआने करीम सीखते और दुआ़एं याद करते, नमाज़ें वग़ैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं। इ़लावा अज़ीं दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में अक्सर घरों के अन्दर रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ात) भी लगाए जाते हैं जिन में इस्लामी बहनें कु़रआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआ़एं याद करती हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हाजी मुश्ताक़ की इनफ़िरादी कोशिश

बाबुल मदीना (कराची) कोरंगी टाऊन के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल मिलने से पहले मैं गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहा था, गाने बाजे सुनना, डान्स पार्टियों में डान्स करना मेरा पसन्दीदा मश्ग़ला था। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ऐसा करम हुवा कि हमारे अ़लाके़ के एक इस्लामी भाई ने मुझे तरग़ीब दिलाई कि मैं इ़शा की नमाज़ के बा'द मस्जिद में कु़रआने पाक पढ़ने आया करूं। उन का मह़ब्बत भरा अन्दाज़ देख कर मुझ से इन्कार न हो सका और मैं ने हां कर ली। जब मैं इ़शा की नमाज़ पढ़ने मस्जिद गया और नमाज़ के बा'द मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ना शुरूअ़ किया तो वहां का माह़ोल बहुत अच्छा लगा और मैं बा क़ाइ़दगी से वहां जाने लगा।

वहां कु़रआन पढ़ाया जाता, वुज़ू व ग़ुस्ल और नमाज़ के मसाइल सिखाए जाते और अख़्लाक़ी तरबिय्यत बहुत ही प्यारे अन्दाज़ में की जाती। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मद्रसतुल मदीना में ता'लीम की बरकत से मैं हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ का पाबन्द हो गया और नेक आ'माल में रग़बत होने लगी। एक मरतबा जब **"दा'वते इस्लामी"** की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मर्हूम निगरान ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى हमारे अ़लाके़ में तशरीफ़ लाए तो मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे फ़रमाया : आप फै़ज़ाने सुन्नत का दर्स क्यूं नहीं देते ? मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मेरी दाढ़ी नहीं।" इरशाद फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्स की बरकत से दाढ़ी वाले बन जाओगे। बा अ़मल मुबल्लिग़ की कही हुई बात पूरी हुई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी सजा ली। येह बयान देते वक़्त मैं एक अ़लाक़ाई ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से सुन्नतों के पैग़ाम को आ़म कर रहा हूं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ'राबी ने ग़लती पकड़ ली (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्मई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का बयान है : एक दिन मैं सूरए माइदह की तिलावत कर रहा था और मेरे साथ एक आ'राबी मौजूद था, जब मैं इस आयत पर पहुंचा : وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (پ۶، المائدہ:۳۸) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।) तो ग़लती से "وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ" पढ़ दिया। आ'राबी ने पूछा : येह किस का कलाम है ? मैं ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम है। उस ने कहा : दोबारा पढ़ो।

मैं ने दोबारा वोही ग़लती कर दी, फिर मैं अपनी ग़लती से आगाह हुवा तो दुरुस्त पढ़ा । आ'राबी ने कहा : अब तुम ने दुरुस्त पढ़ा है । मैं ने पूछा : तुम्हें इस ग़लती का कैसे पता चला ? उस ने कहा : ऐ शख़्स ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ालिब हिक्मत वाला है इस लिये चोर के हाथ काटने का हुक्म फ़रमाया, अगर वोह उसे बख़्श देता और रह़म फ़रमाता तो हाथ काटने का हुक्म न देता । (تفسیر کبیر،٤/٣٥٧)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इख़्लास भी ज़रूरी है (हि़कायत)

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने सह़री के वक़्त अपने हुजरे में सूरए त़ाहा की तिलावत की, जब मैं ने उसे ख़त्म किया तो मुझ पर ऊंघ त़ारी हो गई । मैं ने देखा कि एक शख़्स आस्मान से उतरा जिस के हाथ में एक सफ़ेद रंग का सह़ीफ़ा (रजिस्टर) था, उस ने वोह मेरे सामने रख दिया, मैं ने उस में सूरए त़ाहा लिखी हुई पाई और सिवाए एक कलिमे के तमाम कलिमात के नीचे दस दस नेकियों का सवाब लिखा हुवा देखा, मैं ने उस कलिमे की जगह लिख कर मिटा देने के असरात देखे तो मुझे दुख हुवा, लिहाज़ा मैं ने उस शख़्स से कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने इस कलिमे को भी पढ़ा था, लेकिन मैं इस का सवाब लिखा हुवा पा रहा हूं न ही इस कलिमे को ! इस शख़्स ने जवाब दिया : आप सच कह रहे हैं, आप ने वाक़ेई इसे पढ़ा था और हम ने भी इसे लिख लिया था मगर हम ने एक निदा देने वाले को येह कहते सुना कि इसे मिटा दो ! और इस का अज्रो सवाब भी कम कर दो ! चुनान्चे, हम ने इसे मिटा दिया । येह सुन कर मैं

ख़्वाब में रोने लगा और अ़र्ज़ की : तुम ने ऐसा क्यूं किया ? वोह बोला : एक शख़्स दौराने तिलावत आप के पास से गुज़रा तो आप ने उस की ख़ाति़र अपनी आवाज़ बुलन्द कर ली थी, लिहाज़ा हम ने इसे मिटा दिया। (قوت القلوب،١/١١٢)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

काश येह आवाज़ कु़रआन की तिलावत में इस्ति'माल होती (हि़कायत)

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) किसी मजलिस पर गुज़रे जहां एक गवय्या (Singer) बहुत अच्छी आवाज़ से गा रहा था, आप ने फ़रमाया : काश ! येह आवाज़ कु़रआन शरीफ़ पर इस्ति'माल होती। येह ख़बर गवय्ये को पहुंची उस ने सच्ची तौबा की और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) के साथ रहने लगा ह़त्ता कि कु़रआने करीम का आ़लिम व क़ारी हो गया।

(मिर्क़ात) (मिरआतुल मनाजीह़, 3/270)

येही है आरज़ू ता'लीमे कु़रआन आ़म हो जाए
तिलावत करना मेरा काम सुब्ह़ो शाम हो जाए

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) जिस ने मेरी सुन्नत से बे रग़बती की वोह हम से नहीं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِیْ فَلَیْسَ مِنِّیْ या'नी जिस ने मेरी सुन्नत से बे रग़बती की वोह मुझ से नहीं।

(بخاری،کتاب النکاح،باب الترغیب فی النکاح،٣/٤٢١،حدیث:٥٠٦٣)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : जो किसी सुन्नत को बुरा जाने वोह इस्लाम से ख़ारिज है या जो बिला उज़्र तर्के सुन्नत का आदी हो जाए वोह मेरे परहेज़गारों की जमाअत से ख़ारिज है। (मिरआतुल मनाजीह, 1/151)

हदीस में "सुन्नत" से क्या मुराद है ?

हज़रते अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : इस हदीस में सुन्नत से मुराद तरीक़ा है और तरीक़ा फ़र्ज़, नफ़्ल, आ'माल और अक़ाइद सब को शामिल है। (عمدة القاري،كتاب النكاح،باب الترغيب في النكاح،١٤/٥،تحت الحديث:٥٠٦٣)

सुन्नत किसे कहते हैं ?

सुन्नत का लुग़वी मा'ना तरीक़ा व रास्ता है, हज़रते अल्लामा सय्यिद शरीफ़ जुरजानी हनफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : शरई तौर पर सुन्नत उस दीनी तरीक़े को कहते हैं कि जो फ़र्ज़ और वाजिब न हो और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस पर मवाज़बत (हमेशगी) फ़रमाई हो लेकिन कभी कभार तर्क भी फ़रमा दिया हो। अगर वोह मवाज़बत (हमेशगी) इबादत की ग़रज़ से हो तो इसे **सुनने हुदा** (या'नी सुन्नते मुअक्कदा) कहते हैं और अगर मवाज़बत (हमेशगी) आदत के तौर पर हो तो इसे **सुनने ज़वाइद** कहते हैं। पस सुन्नते हुदा (या'नी सुन्नते मुअक्कदा) वोह है कि जिस पर तक्मीले दीन के लिये अमल किया जाता हो इस का तर्क मकरूह या इसाअत (या'नी बुरा) होता है।

जब कि सुनने ज़वाइद (या'नी सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा) वोह हैं कि जिन पर अ़मल करना मह़मूद और अच्छा होता है इन के तर्क में कराहत और इसाअत (या'नी बुराई) नहीं होती जैसा कि उठने बैठने, खाने पीने और लिबास में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के त़रीके़ को अपनाना। (التعريفات،ص ۸۸)

सुन्नत की अक़्साम

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن सुन्नत की क़िस्में बयान करते हुवे लिखते हैं : सुन्नते हुदा (या'नी सुन्नते मुअक्कदा) इस के तर्क से इसाअत व कराहत लाज़िम आती है मसलन जमाअ़त, अज़ान और तक्बीर वग़ैरा, सुन्नते ज़वाइद (या'नी सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा) इस के तर्क से इसाअत व कराहत लाज़िम नहीं आती मसलन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का लिबास पहनना, नफ़्ल व मन्दूब का मुआ़मला भी येही है इस के करने वाले को सवाब होगा मगर तारिक गुनहगार नहीं, फ़ुक़हा ने बा'ज़ औक़ात सुन्नते ज़वाइद की मिसाल नमाज़ में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़िराअत, रुकूअ़ और सुजूद को लम्बा करना भी दी है जब वोह (या'नी सुन्नत) दीन और शआ़इरे दीन का ह़िस्सा नहीं तो उन्हें सुन्नते ज़वाइद कहा जाता है ब ख़िलाफ़ सुन्नते हुदा के, वोह सुनने मुअक्कदा होती हैं जो वाजिब के क़रीब हैं उन का तारिक गुमराह है। واللّٰه تعالٰی اعلم (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, 7/394 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सुन्नत पर अ़मल की बरकत से मग़्फ़िरत हो गई (हिकायत)

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन बिन जद्दा उ़क्बरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ने हज़रते सय्यिदुना हिबतुल्लाह त़बरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی को ख़्वाब में देख कर पूछा : ما فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी । अ़र्ज़ की : किस सबब से ? तो उन्हों ने राज़दाराना अन्दाज़ में कहा : सुन्नत की वज्ह से ।

(سیراعلام النبلاء، اللالکائی (ھبۃ اللّٰہ بن الحسن) ، ۱۳/۲۶۹، رقم:۳۷۸۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सुन्नत पर अ़मल करना मग़्फ़िरत का ज़रीआ़ बन गया । यक़ीनन कामयाब व कामरान है वोह जो फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी के साथ साथ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों को अपना ओढ़ना बिछौना बना ले ।

सवाब के ह़क़दार बनिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे मा'मूलात में से कई काम ऐसे हैं जिन्हें अगर सुन्नत के मुत़ाबिक़ किया जाए तो हम सवाब के ह़क़दार बन सकते हैं मसलन सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना पीना, चलना फिरना, सोना जागना, मिस्वाक करना, लिबास पहनना, जूते पहनना और उतारना, तेल लगाना, नाख़ुन काटना, गुफ़्तगू करना वग़ैरा । अल्लाह तआ़ला हम सब को सुन्नत से मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमाए । सुन्नत से मह़ब्बत के क्या कहने ! चुनान्चे,

जन्नत में आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस

रसूले बे मिसाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح،کتاب الایمان ۱/۵۵،حدیث:۱۷۵)

बात करते वक़्त मुस्कुराया करते (हिकायत)

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ जब भी बात करते तो मुस्कुराते । मैं ने सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : आप इस आ़दत को तर्क फ़रमा दीजिये वरना लोग आप को अहमक़ समझने लगेंगे । हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने जब भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बात करते देखा या सुना आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुराते थे ।

(مسند احمد،مسند الانصار، باقی حدیث ابی الدرداء، ۸/۱۷۱، حدیث: ۲۱۷۹۱)

जिस की तस्कीं से रोते हुवे हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

(हदाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराना सदक़ा है

सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : अपने भाई से **मुस्कुरा** कर मिलना तुम्हारे लिये सदक़ा है और **नेकी की दा'वत देना** और बुराई से मन्अ़ करना **सदक़ा** है।

(ترمذی،کتاب البر والصلة،باب ما جاء فی صنائع المعروف،۳/۳۸٤،حدیث:١٩٦٣)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द **"नेकी की दा'वत"** सफ़ह़ा 245 पर लिखते हैं : बयान कर्दा ह़दीसे मुबारका में मुस्कुरा कर मिलने, नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने को सदक़ा कहा गया। سُبْحٰنَ اللّٰه मुस्कुरा कर मिलने की तो क्या बात है ! मुस्कुरा कर मिलना, मुस्कुरा कर किसी को समझाना उ़मूमन नेकी की दा'वत के मदनी काम को निहायत सहल व आसान बना देता और ह़ैरत अंगेज़ नताइज का सबब बनता है। जी हां ! आप की मा'मूली सी **मुस्कुराहट** किसी का दिल जीत कर उस की गुनाहों भरी ज़िन्दगी में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा कर सकती है और मिलते वक़्त बे रुख़ी और ला परवाही से इधर उधर देखते हुवे हाथ मिलाना किसी का दिल तोड़ कर उस को مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ गुमराही के गहरे गढ़े में गिरा सकता है। लिहाज़ा जब भी किसी से मिलें, गुफ़्तगू करें उस वक़्त ह़त्तल इमकान **मुस्कुराते** रहिये। अगर ख़ुश्क मिज़ाजी या बे तवज्जोगी से मिलने की ख़स्लत है तो मिलन सारी और मुस्कुरा कर मिलने की आ़दत बनाने के लिये ख़ूब कोशिश कीजिये, बल्कि मुस्कुराने की आ़दत पक्की करने के लिये ज़रूरतन किसी की ज़िम्मेदारी

भी लगाइये कि वोह दूसरों से बात करते हुवे आप का मुंह फूला हुवा या सपाट मह़सूस करे तो गाहे ब गाहे याद दिहानी करवाते हुवे कहता रहे या आप को इस त़रह़ की तह़रीर दिखा दिया करे : **"बात करते हुवे मुस्कुराना सुन्नत है।"** (माख़ूज़ अज़ "नेकी की दा'वत", स. 245)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सरकार की पसन्द अपनी पसन्द (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक दरज़ी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत की, (ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मैं भी दा'वत में शरीक हो गया, दरज़ी ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सामने रोटी, कद्दू (लौकी शरीफ़) और गोश्त का सालन रखा। मैं ने देखा नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बरतन से कद्दू शरीफ़ तलाश कर के तनावुल फ़रमा रहे हैं (इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना अ़मल बताते हुवे फ़रमाते हैं) فَلَمْ اَزَلْ اُحِبُّ الدُّبَّآءَ مِنْ یَّوْمِئِذٍ या'नी उस दिन के बा'द मैं कद्दू शरीफ़ को पसन्द करता हूं।

(بخاری، کتاب البیوع، باب ذکر الخیاط، ۲/۱۷، حدیث: ۲۰۹۲)

सुन्नत पर अ़मल का जज़्बा (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی नक़्ल करते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिब्ली** बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی को वुज़ू के वक़्त **मिस्वाक** की ज़रूरत हुई,

तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक सोने की अशरफ़ी) में **मिस्वाक** ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई । बा'ज़ लोगों ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा ख़र्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी मिस्वाक ली जाती है ? फ़रमाया : बेशक येह दुन्या और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मच्छर के पर के बराबर भी हैसिय्यत नहीं रखतीं, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से येह पूछ लिया कि तू ने मेरे प्यारे ह़बीब की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? जो मालो दौलत मैं ने तुझे दिया था उस की ह़क़ीक़त तो (मेरे नज़्दीक) मच्छर के पर के बराबर भी नहीं थी, तो आख़िर ऐसी ह़क़ीर दौलत इस अ़ज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) को ह़ासिल करने पर क्यूं ख़र्च नहीं की ? तो मैं क्या जवाब दूंगा !

(مُلَخَّص ازلواقع الانوارالقدسية، ص٨٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे अस्लाफ़ सुन्नतों से किस क़दर प्यार करते थे ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक दीनार (या'नी सोने की अशरफ़ी) प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत मिस्वाक पर कुरबान कर दिया और एक हम हैं कि इश्क़े रसूल का दा'वा तो करते हैं मगर सुन्नतों पर अ़मल का कोई जज़्बा नहीं होता । हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام तो प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के ऐसे पाबन्द थे कि इन के नज़्दीक किसी सुन्नत का अन्जाने में रह जाना भी क़ाबिले कफ़्फ़ारा था चुनान्चे,

सुन्नत के क़द्र दान (हिकायत)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ तालीफ़ फै़ज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल में फ़रमाते हैं : "**कीमियाए सआ़दत**" में है, एक बुज़ुर्ग ने एक बार सुन्नत के मुत़ाबिक़ सीधी जूती से पहनने का आग़ाज़ करने के बजाए बे ख़याली में उल्टी जूती पहले पहन ली इस सुन्नत के रह जाने पर उन्हें सख़्त सदमा हुवा और इस के इ़वज़ उन्हों ने गेहूं की दो बोरियां ख़ैरात कीं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह उन्हीं ह़ज़रात का हिस़्सा था। काश ! हमें भी अपने बुज़ुर्गों के त़रीक़ों पर चलना नसीब हो जाए। (फै़ज़ाने सुन्नत, स. 462)

सुन्नत की मह़ब्बत (हिकायत)

ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुबारकपुरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपने हर अ़मल में सुन्नत का बहुत ज़ियादा ख़याल रखते थे। एक बार ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दाएं पाउं में ज़ख़्म हो गया, एक साहिब दवा ले कर पहुंचे और कहा : ह़ज़रत ! दवा ह़ाज़िर है। जाड़े (या'नी सर्दियों) का ज़माना था ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मोज़ा पहने हुवे थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पहले बाएं (या'नी उल्टे) पाउं का मोज़ा उतारा, वोह साहिब बोल पड़े : ह़ज़रत ! ज़ख़्म तो दाहिने (या'नी सीधे) पाउं में है ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : बाएं (या'नी उल्टे) पाउं का पहले उतारना सुन्नत है। (नेकी की दा'वत, स. 213)

आलए अदाए सुन्नत से महब्बत और ता'ज़ीम

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه का दिल **इत्तिबाए़ सुन्नत** के जज़्बे से मा'मूर व सरशार है। आप دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه न सिर्फ़ खुद सुन्नतों पर अ़मल करते हैं बल्कि दीगर मुसलमानों को भी ज़ेवरे सुन्नत से आरास्ता करने में हमातन मसरूफे़ अ़मल हैं। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه के कुर्ते में सीने की त़रफ़ दो जेबें होती हैं। **मिस्वाक शरीफ़** रखने के लिये आप सीने की बाईं जानिब वाली जेब के बराबर एक छोटी सी जेब बनवाते हैं। इस की वज्ह आप دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने येह इरशाद फ़रमाई : मैं चाहता हूं कि **येह आलए अदाए सुन्नत मेरे दिल से क़रीब रहे।**

अ़त्तार से मह़बूब की सुन्नत की ले खि़दमत
डंका येह तेरे दीन का दुन्या में बजा दे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) औ़रत को उस के ख़ावन्द के खि़लाफ़ उभारने वाला हम से नहीं

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَیْسَ مِنَّا مَنْ خَبَّبَ اِمْرَاَۃً عَلٰی زَوْجِھَا اَوْعَبْدًا عَلٰی سَیِّدِهٖ या'नी जो औ़रत को उस के ख़ावन्द या किसी ग़ुलाम को उस के आक़ा के खि़लाफ़ उभारे वोह हम से नहीं।

(ابوداؤد، کتاب الطلاق،باب فیمن خبب امرأۃعلی زوجھا،۲/۳۶۹،حدیث:۲۱۷۵)

दो दिलों को जोड़ने की कोशिश करो

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़ावन्द-बीवी में फ़साद डालने की बहुत सूरतें हैं : औ़रत से ख़ावन्द की बुराइयां बयान करे, दूसरे मर्दों की ख़ूबियां ज़ाहिर करे क्यूंकि औ़रत का दिल कच्ची शीशी की त़रह़ कमज़ोर होता है या इन में इख़्तिलाफ़ डालने के लिये जादू ता'वीज़ गन्डे करने सब ह़राम है, और ग़ुलाम या लौंडी को बिगाड़ने के मा'ना येह हैं कि उसे भाग जाने पर आमादा करे, अगर वोह ख़ुद भागना चाहें तो उन की इमदाद करे, बहर ह़ाल दो दिलों को जोड़ने की कोशिश करो तोड़ो न।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/101)

बादशाह और लालची औ़रत (ह़िकायत)

बनी इस्राईल में एक बहुत इ़बादत गुज़ार लकड़हारा (लकड़ियां बेचने वाला) था, उस की बीवी बनी इस्राईल की ह़सीनो जमील औ़रतों में से थी, जब उस मुल्क के बादशाह को लकड़हारे की बीवी के ह़ुस्नो जमाल की ख़बर मिली तो उस के दिल में शैत़ानी ख़याल आया। चुनान्चे, उस ने एक बुढ़िया को उस लकड़हारे की बीवी के पास भेजा ताकि वोह उसे वर्ग़लाए और लालच दे कर इस बात पर आमादा करे कि वोह लकड़हारे को छोड़ कर शाही मह़ल में उस की मलिका बन कर ज़िन्दगी गुज़ारे। वोह मक्कार बुढ़िया लकड़हारे की बीवी के पास गई और उस से कहा : तू कितनी अ़जीब औ़रत है कि ऐसे शख़्स के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रही है जो निहायत ही मुफ़्लिस और ग़रीब है जो तुझे आसाइश व

आराम फ़राहम नहीं कर सकता, अगर तू चाहे तो बादशाह की मलिका बन सकती है। बादशाह ने पैग़ाम भेजा है कि अगर तू लकड़हारे को छोड़ देगी तो मैं तुझे इस झोंपड़ी से निकाल कर अपने मह़ल की ज़ीनत बनाऊंगा, तुझे हीरे जवाहिरात से आरास्ता व पैरास्ता करूंगा, तेरे लिये रेशम और उ़म्दा कपड़ों का लिबास होगा। जब उस औ़रत ने येह बातें सुनीं तो लालच में आ गई और उस की नज़रों में बुलन्दो बाला मह़ल्लात और उस की आसाइशें घूमने लगीं। चुनान्चे, उस ने लकड़हारे से बे रुख़ी इख़्तियार कर ली और हर वक़्त उस से नाराज़ रहने लगी, बिल आख़िर लकड़हारे ने मजबूरन उस बे वफ़ा लालची औ़रत को त़लाक़ दे दी। वोह ख़ुशी ख़ुशी बादशाह के पास पहुंची और उस से शादी कर ली। जब बादशाह अपनी नई दुल्हन के पास ह़ज्लए अ़रूसी में पहुंचा तो उस की बीनाई जाती रही, हाथ ख़ुश्क (या'नी बेकार), ज़बान गूंगी और कान बहरे हो गए। औ़रत का भी येही ह़ाल हुवा। जब येह ख़बर उस दौर के नबी عَلَيْهِ السَّلَام को पहुंची और उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उन दोनों के बारे में अ़र्ज़ की तो इरशाद हुवा : मैं हरगिज़ इन दोनों को मुआ़फ़ नहीं करूंगा, क्या इन्हों ने येह गुमान कर लिया कि जो ह़रकत इन्हों ने लकड़हारे के साथ की मैं उस से बे ख़बर हूं ? (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 122)

तू कितना अच्छा है ! (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शैत़ान पानी पर अपना तख़्त बिछाता है, फिर अपने लश्कर भेजता है। उन लश्करों

में इब्लीस के ज़ियादा क़रीब उस का दरजा होता है जो सब से ज़ियादा फ़ितनाबाज़ होता है। एक लश्कर वापस आ कर बताता है कि मैं ने फ़ुलां फ़ितना बरपा किया तो शैतान कहता है : तू ने कुछ भी नहीं किया। फिर एक और लश्कर आता है और कहता है : मैं ने एक आदमी को उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक उस के और उस की बीवी के दरमियान जुदाई नहीं डाल दी। येह सुन कर इब्लीस उसे अपने क़रीब कर लेता है और कहता है : तू कितना अच्छा है ! और अपने साथ चिमटा लेता है।

(مسلم،کتاب صفة القيامة...الخ،باب تحريش الشيطان...الخ،ص ١٥١١،حديث:٢٨١٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) नाहक़ क़ब्ज़ा जमाने वाला हम से नहीं

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : مَنِ ادَّعٰى مَا لَيْسَ لَهٗ فَلَيْسَ مِنَّا وَلْيَتَبَوَّاْ مَقْعَدَهٗ مِنَ النَّارِ या'नी जो कोई उस चीज़ का दा'वा करे जो उस की नहीं है तो वोह हम में से नहीं और वोह अपना ठिकाना आग में ढूंडे।

(ابن ماجه،کتاب الاحکام،باب من ادعى...الخ،٣/٩٥،حديث:٢٣١٩)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी झूटा मुद्दई दो गुनाह करता है (1) झूट बोलना और (2) दूसरे के ह़क़ मारने की कोशिश करना। लिहाज़ा वोह हमारे त़ौर त़रीक़े से निकल जाता है। मोमिन को इन उ़यूब से पाको साफ़ होना चाहिये, "ढूंडे" अम्र ब मा'ना ख़बर है या'नी वोह आग का मुस्तह़िक़ है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/397)

अपना दा'वा वापस ले लिया (हिकायत)

एक **हज़्रमी** (या'नी मुल्के यमन के शहर "हज़्रमौत" के बाशिन्दे) और एक **किन्दी** (या'नी क़बीलए किन्दा से वाबस्ता एक शख़्स) ने मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अन्वर में **यमन** की एक ज़मीन के मुतअ़ल्लिक़ अपना झगड़ा पेश किया। **हज़्रमी** ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी ज़मीन इस के बाप ने छीन ली थी, अब वोह उस के क़ब्ज़े में है।" तो नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम्हारे पास कोई गवाही है ?" अ़र्ज़ की : "नहीं, लेकिन मैं इस से क़सम लूंगा कि **अल्लाह** की क़सम खा कर कहे : वोह नहीं जानता कि वोह मेरी ज़मीन है जो उस के बाप ने ग़सब कर ली थी। **किन्दी** क़सम खाने के लिये तय्यार हो गया तो रसूले अकरम, शहनशाहे आदमो बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो (झूटी) क़सम खा कर किसी का माल दबाएगा वोह बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में इस हालत में पेश होगा कि **उस के हाथ पाउं कटे हुवे होंगे**।" येह सुन कर **किन्दी** ने कह दिया कि येह ज़मीन उसी (या'नी हज़्रमी) की है।

(ابوداؤد،کتاب الایمان والنذور،باب فیمن حلف۔۔۔الخ، ۳/۲۹۸، حدیث:۳۲۴۴)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰه येह है असर उस ज़बाने फ़ैज़े तर्जुमान का कि दो कलिमात में उस (किन्दी) के दिल का हाल बदल गया और सच्ची बात कह कर ज़मीन से ला दा'वा हो गया। (मिरआतुल मनाजीह, 5/403)

ज़मीन पर क़ब्ज़े का हुक्मे शरई

आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان से "फ़तावा रज़विय्या" शरीफ़ में इस मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ एक सुवाल हुवा : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि एक शख़्स ने अराज़ी मस्जिद की जो उस के पीछे थी अपने मकान में डाल ली है और दीवार बनवा ली, और ताजे मेह़राब मस्जिद व मनारे मस्जिद दबा कर अपनी दीवार बुलन्द कर ली, ऐसे शख़्स के वासिते़ क्या हुक्मे शरअ़ शरीफ़ है ? फ़क़त़

अल जवाब : फ़ासिक़, फ़ाजिर, ज़ालिम, जाइर, मुर्तकिबे कबाइर, मुस्तह़िक़े अ़ज़ाबुन्नार व ग़ज़बुल जब्बार है, وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تعَالٰی ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो शख़्स एक बालिश्त भर ज़मीन नाह़क़ लेगा **अल्लाह** तआ़ला वोह ज़मीन, ज़मीन के सातों त़बक़ों तक उस के गले में क़ियामत के दिन तक त़ौक़ बना कर डालेगा । (مسلم،کتاب المساقاۃ،باب تحریم الظلم ...الخ،ص۸۷۰،حدیث:۱۶۱۱)

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो शख़्स किसी क़दर ज़मीन नाह़क़ दबा लेगा क़ियामत के दिन ज़मीन के सातवें त़बक़ तक धंसा दिया जाएगा ।

(بخاری،کتاب المظالم والغصب،باب اثم من ظلم شیئامن الارض،۲/۱۲۹،حدیث:۲۴۵۴)

हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो शख़्स एक बालिश्त ज़मीन

नाहक़ ले ले **अल्लाह** तआ़ला उसे तक्लीफ़ दे कि उस ज़मीन को खोदे यहां तक कि सातवें त़बके़ के ख़त्म तक पहुंचे फिर क़ियामत के दिन उस का त़ौक़ बना कर उस के गले में डाले यहां तक कि तमाम मख़्लूक़ का ह़िसाब किताब ख़त्म हो कर फ़ैसला फ़रमा दिया जाए। (مسند احمد،مسند الشاميين،٦/١٨٠،حديث:١٧٥٨٢)

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो किसी क़दर ज़मीन नाजाइज़ त़ौर पर ले **अल्लाह** तआ़ला सातों ज़मीनों से उस के गले में त़ौक़ डाले, न उस का फ़र्ज़ क़बूल हो न नफ़्ल।

(مسند ابی يعلى،مسند سعد بن ابی وقاص،١/٣١٥،حديث:٧٤٠)

इन अह़ादीस को लिखने के बा'द **आ'ला ह़ज़रत**, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : उस शख़्स पर फ़र्ज़ है कि मस्जिद की ज़मीन व इमारत फ़ौरन फ़ौरन ख़ाली कर दे, और अपनी नापाक ता'मीर जो उन पर कर ली है ढा कर दूर कर दे, **अल्लाह** क़ह्हारो जब्बार के ग़ज़ब से डरे, ज़रा मन दो मन नहीं बीस पच्चीस ही सेर मिट्टी के ढेले गले में बांध कर घड़ी दो घड़ी लिये फिरे। उस वक़्त क़ियास करे कि इस ज़ुल्मे शदीद से बाज़ आना आसान है या ज़मीन के सातों त़बक़ों तक खोद कर क़ियामत के दिन तमाम जहान का ह़िसाब पूरा होने तक गले में مَعَاذَ اللّٰه येह करोड़ों मन का त़ौक़ पड़ना और सातवें ज़मीन तक धंसा दिया जाना, وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى،وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم।

(फ़तावा रज़विय्या, 19/663)

(5) बद शुगूनी लेने वाला हम से नहीं

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ مِنَّا مَنْ تَطَيَّرَ اَوْ تُطُيِّرَ لَهٗ اَوْ مَنْ تَكَهَّنَ اَوْ تُكُهِّنَ لَهٗ اَوْ مَنْ سَحَرَ اَوْ سُحِرَ لَهٗ या'नी जिस ने बद शुगूनी ली या जिस के लिये बद शुगूनी ली गई या जिस ने कहानत की या जिस के लिये की गई, या जादू करने और करवाने वाला हम से नहीं। (مسند بزار،اول حديث عمران بن حصين،٩/٥٢،حديث:٣٥٧٨)

बद शुगूनी की ता'रीफ़ और इस की क़िस्में

शुगून का मा'ना है फ़ाल लेना या'नी किसी चीज़, शख़्स, अ़मल, आवाज़ या वक़्त को अपने ह़क़ में अच्छा या बुरा समझना। इस की बुन्यादी त़ौर पर दो क़िस्में हैं : (1) बुरा शुगून लेना (2) अच्छा शुगून लेना। अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी कु़रत़ुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى **तफ़्सीरे कु़रत़ुबी** में नक़्ल करते हैं : अच्छा शुगून येह है कि जिस काम का इरादा किया हो उस के बारे में कोई कलाम सुन कर दलील पकड़ना, येह उस वक़्त है जब कलाम अच्छा हो, अगर बुरा हो तो बद शुगूनी है। शरीअ़त ने इस बात का हुक्म दिया है कि इन्सान अच्छा शुगून ले कर खुश हो और अपना काम खुशी खुशी पायए तक्मील तक पहुंचाए और जब बुरा कलाम सुने तो उस की त़रफ़ तवज्जोह न करे और न ही उस के सबब अपने काम से रुके। (الجامع لاحكام القرآن،پ٢٦، الاحقاف،تحت الاية:٤، ٨/١٣٢،جزء١٦)

न जाने किस मन्हूस की शक्ल देखी थी ?

बद शुगूनी की आ़दते बद में मुब्तला शख़्स को जब किसी काम में नुक़्सान होता है या किसी मक़्सद में नाकामी होती है

तो वोह येह जुम्ला कहता है : आज सुब्ह सवेरे न जाने किस मन्हूस की शक्ल देखी थी ? हालांकि इन्सान सुब्ह सवेरे बिस्तर पर आंख खोलने के बा'द सब से पहले अपने ही घर के किसी फ़र्द की शक्ल देखता है, तो क्या घर का कोई आदमी इस क़दर मन्हूस हो सकता है कि सिर्फ़ उस की शक्ल देख लेने से सारा दिन नुहूसत में गुज़रता है ? किसी को मन्हूस कहने पर बा'ज़ औक़ात शर्मिन्दगी का भी सामना करना पड़ता है, एक सबक़ आमोज़ हिकायत से इस बात को समझने की कोशिश कीजिये। चुनान्चे,

एक बादशाह और उस के साथी शिकार की ग़रज़ से जंगल की जानिब चले जा रहे थे। सुब्ह के सन्नाटे में घोड़ों की टापें साफ़ सुनाई दे रही थीं जिन्हें सुनते ही अक्सर राहगीर रास्ते से हट जाते थे क्यूंकि बादशाह सलामत शिकार पर जाते हुवे किसी का रास्ते में आना पसन्द नहीं करते थे। बादशाह और उस के साथियों की सुवारी बड़े तुमतुराक़ (या'नी शानो शौकत) से शहर से गुज़र रही थी, जूंही बादशाह शहर की फ़सील (चार दीवारी) के क़रीब पहुंचा उस की निगाह सामने आते हुवे एक आंख वाले शख़्स पर पड़ी जो रास्ते से हटने के बजाए बड़ी बे नियाज़ी से चला आ रहा था। उसे सामने आता हुवा देख कर बादशाह गुस्से से चीख़ा : "उफ़ ! येह तो इन्तिहाई बद शुगूनी है। क्या इस बदबख़्त काने (या'नी एक आंख वाले) शख़्स को इल्म नहीं था कि जब बादशाह की सुवारी गुज़र रही हो तो रास्ता छोड़ दिया जाता है, लेकिन इस मन्हूस यकचश्म ने तो हमारा रास्ता काट कर इन्तिहाई नुहूसत का सुबूत दिया है।" बादशाह सिपाहियों की जानिब मुड़ा और गुस्से से चीख़ा : "हम हुक्म देते हैं कि इस एक आंख वाले शख़्स को इन सुतूनों से बांध दिया जाए और हमारे

लौटने तक येह शख़्स यहीं बंधा रहेगा। हम वापसी पर इस की सज़ा तजवीज़ करेंगे।" सिपाहियों ने फ़ौरन हुक्म की ता'मील की और उस शख़्स को सुतूनों से बांध दिया गया। बादशाह और उस के साथी गर्द उड़ाते जंगल की जानिब रवाना हो गए। बादशाह के ख़दशात के बर अ़क्स उस रोज़ बादशाह का शिकार बड़ा कामयाब रहा। बादशाह ने अपनी पसन्द के जानवरों और परन्दों का शिकार किया। बादशाह बहुत ख़ुश था क्यूंकि आज उस का एक निशाना भी नहीं चूका बल्कि जिस जानवर पर निगाह रखी उसे ह़ासिल कर लिया। वज़ीर ने जानवरों और परन्दों को गिनते हुवे कहा : "वाह ! आज तो आप का शिकार बहुत ख़ूब रहा, क्या निगाह थी और क्या निशाना !" इसी त़रह़ तमाम साथी भी बादशाह की ता'रीफ़ में मसरूफ़ थे, जब शाम ढले बादशाह शहर के क़रीब पहुंचा तो उस शख़्स को रस्सियों में जकड़ा हुवा पाया। बादशाह की सुवारी के साथ साथ जानवरों और परन्दों से भरा छकड़ा भी चला आ रहा था जिसे देख कर बादशाह और उस के साथी ख़ुशी से फूले न समा रहे थे। भरा हुवा छकड़ा देख कर वोह शख़्स ज़ोरदार आवाज़ में बादशाह से मुख़ात़ब हुवा : "कहिये बादशाह सलामत ! हम दोनों में से कौन मन्हूस है, मैं या आप ?" येह सुनते ही बादशाह के सिपाही उस शख़्स के सर पर तल्वार तान कर खड़े हो गए लेकिन बादशाह ने उन्हें हाथ के इशारे से रोक दिया। वोह शख़्स बिला ख़ौफ़ फिर मुख़ात़ब हुवा : "कहिये बादशाह सलामत ! हम में से कौन मन्हूस है ? **मैं** या **आप** !!! मैं ने आप को देखा तो मैं रस्सियों में बंध कर चिलचिलाती धूप में दिन भर जलता रहा जब कि मुझे देखने पर आप को आज ख़ूब शिकार हाथ आया।" येह सुन कर बादशाह नादिम हुवा और उस शख़्स को फ़ौरन आज़ाद कर दिया और बहुत से इन्आ़मो इकराम से भी नवाज़ा।

बद शुगूनी के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बद शुगूनी इन्सान के लिये दीनी व दुन्यवी दोनों ए'तिबार से बहुत ज़ियादा ख़त़रनाक है। येह इन्सान को वस्वसों की दलदल में उतार देती है चुनान्चे, वोह हर छोटी बड़ी चीज़ से डरने लगता है यहां तक कि वोह अपनी परछाई (या'नी साए) से भी ख़ौफ़ खाता है। वोह इस वह्म में मुब्तला हो जाता है कि दुन्या की सारी बदबख़्ती व बद नसीबी उसी के गिर्द जम्अ़ हो चुकी है और दूसरे लोग पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। ऐसा शख़्स अपने प्यारों को भी वह्मी निगाह से देखता है जिस से दिलों में कदूरत (या'नी दुश्मनी) पैदा होती है। बद शुगूनी की बात़िनी बीमारी में मुब्तला इन्सान ज़ेह्नी व क़ल्बी त़ौर पर मफ़्लूज (या'नी नाकारा) हो कर रह जाता है और कोई काम ढंग से नहीं कर सकता। इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावरदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं :

اِعْلَمْ اَنَّهُ لَيْسَ شَيْءٌ اَضَرَّ بِالرَّأْيِ وَلَا اَفْسَدَ لِلتَّدْبِيرِ مِنِ اعْتِقَادِ الطِّيَرَةِ

जान लो ! बद शुगूनी से ज़ियादा फ़िक्र को नुक़्सान पहुंचाने वाली और तदबीर को बिगाड़ने वाली कोई शै नहीं है। (ادب الدنیا والدین، ص ۲۷٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) कहानत करने करवाने वाला हम से नहीं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ مِنَّا مَنْ تَطَيَّرَ اَوْ تُطُيِّرَ لَهُ اَوْ مَنْ تَكَهَّنَ اَوْ تُكُهِّنَ لَهُ اَوْ مَنْ سَحَرَ اَوْ سُحِرَ لَهُ या'नी

जिस ने बद शुगूनी ली या जिस के लिये बद शुगूनी ली गई, या जिस ने कहानत की या जिस के लिये की गई, या जादू करने और करवाने वाला हम से नहीं।

(مسند بزار،اول حدیث عمران بن حصین،۹/۵۲،حدیث:۳۵۷۸)

कहानत किसे कहते हैं ?

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : बा'ज़ काहिनों का दा'वा था कि हमारे पास जिन्नात आ कर हम को ग़ैबी चीज़ें, ग़ैबी ख़बरें बताते हैं कि शयात़ीन आस्मान पर जा कर फ़िरिश्तों की बातें सुन कर एक सच में सौ झूट मिला कर काहिनों नुजूमियों को बताते हैं। बा'ज़ काहिन ख़ुफ़्या अ़लामात, अस्बाब से ग़ैबी चीज़ों का पता बताते हैं उन्हें अ़र्राफ़ कहते हैं और इस अ़मल को अ़राफ़त, येह दोनों अ़मल ह़राम हैं इन की उजरत लेना-देना दोनों ह़राम हैं। (मिर्क़ात व अशिअ़आ) लफ़्ज़ काहिन बहुत आ़म है। नुजूमी, रम्माल, अ़र्राफ़ सब को काहिन कहा जाता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/267)

काहिनों से ग़ैबी ख़बरें पूछना

काहिनों से ग़ैबी ख़बरें पूछना ह़राम है उन्हें आ़लिमे ग़ैब जानना, उन की ख़बरों की तस्दीक़ करना कुफ़्र है, हां ! उन्हें झूटा करने के लिये उन से कुछ पूछ कर लोगों पर उन का झूटा ज़ाहिर करना अच्छा है कि येह तब्लीग़ है, यहां पहली सूरत मुराद है, इस से मन्अ़ फ़रमाया गया। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/268)

काहिनों की बा'ज़ बातें दुरुस्त होने की वज्ह

हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि कुछ लोगों ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से काहिनों के बारे में पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उन की बातों की कोई ह़क़ीक़त नहीं है। लोगों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जो ख़बर वोह देते हैं बा'ज़ औक़ात वोह सच निकलती हैं। इरशाद फ़रमाया : वोह कलिमा जिन्न से सुना हुवा होता है जिसे जिन्नी उचक लेती है और अपने दोस्त (काहिन) के कान में इस त़रह़ डाल देती है जिस त़रह़ एक मुर्ग़ी दूसरी मुर्ग़ियों के कान में आवाज़ पहुंचाती है, फिर काहिन उस कलिमे में सौ से ज़ियादा झूटी बातें मिला देते हैं।

(مسلم،کتاب السلام،باب تحریم الکھانۃ و اتیان الکھان، ص۱۲۲٤،حدیث:۲۲۲۸)

सफ़ेद गधा इस से ज़ियादा नुजूम जानता है (ह़िकायत)

नसीरुद्दीन तूसी जो कि इल्मे रियाज़ी का बड़ा माहिर गुज़रा है एक वली की मुलाक़ात करने गया। किसी ने उन बुज़ुर्ग से अ़र्ज़ की : येह दुन्या का इस वक़्त बहुत बड़ा आ़लिम है। उन्हों ने पूछा कि इस में क्या कमाल है ? कहा कि इल्मे नुजूम में कामिल माहिर है। फ़रमाया : सफ़ेद गधा इस से ज़ियादा नुजूम जानता है। तूसी को बहुत ना गवार गुज़रा और वहां से उठ गया, कमाले इत्तिफ़ाक़ से रात को एक चक्की वाले के घर पहुंचा जिस के यहां बहुत से गधे पले हुवे थे। गधे वाला बोला : आज सख़्त बारिश होगी, अन्दर आराम करो। तूसी ने पूछा : तुझे क्या ख़बर ? उस ने

कहा कि जब मेरा गधा अपनी दुम तीन बार हिलाता है तो सख़्त बारिश होती है, आज उस ने दुम हिलाई है। चुनान्चे, कुछ देर बा'द तेज़ बारिश आ गई। तब येह नादिम हुवा कि वाक़ेई गधे भी इल्मे नुजूम वाले से ज़ियादा वाक़िफ़िय्यत रखते हैं। हवा में उड़ना, दरया पर चलना, बड़ा आ़लिम हो जाना कोई कमाल नहीं। मख्खी भी उड़ती है, मछली भी तैरती है, चील आंधी को और मेंडक बारिश को पहले से ही मा'लूम कर लेते हैं येह औसाफ़ जानवरों में भी हैं बड़ा इल्म शैत़ान को भी था। तसव्वुफ़ और फ़क़ीरी इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा عَلَيْهِ السَّلَام से ह़ासिल होती है।

रियाज़त नाम है तेरी गली में आने जाने का — तसव्वुर में तेरे रहना इबादत इस को कहते हैं
तुझी को देखना तेरी ही सुनना तुझ में गुम होना — ह़क़ीक़ते मा'रिफ़त अहले त़रीक़त इस को कहते हैं

(तफ़्सीरे नईमी, 1/515)

नुजूमी को हाथ दिखाना

बहुत से लोग काहिनों, नुजूमियों, प्रोफ़ेसरों और रमल व जफ़र के झूटे दा'वेदारों के हां जा कर क़िस्मत का ह़ाल मा'लूम करते हैं, अपना हाथ दिखाते हैं, फ़ालनामे निकलवाते हैं, फिर इस के मुत़ाबिक़ आइन्दा ज़िन्दगी का लाइह़ए अ़मल बनाते हैं। इस त़र्ज़े अ़मल में नुक़्सान ही नुक़्सान है। चुनान्चे, इमामे अहले सुन्नत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : काहिनों और ज्योतिशियों से हाथ दिखा कर तक़्दीर का भला बुरा दरयाफ़्त करना अगर बत़ौरे ए'तिक़ाद हो या'नी जो येह बताएं ह़क़ है तो कुफ़्रे ख़ालिस है, इसी को ह़दीस में फ़रमाया : فَقَدْ كَفَرَ بِمَا اُنْزِلَ عَلٰی مُحَمَّدٍ

या'नी उस ने मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल होने वाली शै का इन्कार किया।

(ترمذی،کتاب الطھارۃ،باب ماجاء فی کراھیۃ اتیان الحائض،۱/۱۸۵،حدیث:۱۳۵)

और अगर बत़ौरे ए'तिक़ाद व तयक़्क़ुन (या'नी यक़ीन रखने के त़ौर पर) न हो मगर मैल व रग़बत के साथ हो तो गुनाहे कबीरा है, इसी को ह़दीस में फ़रमाया : لَمْ يَقْبَلِ اللّٰهُ لَهٗ صَلٰوةَ اَرْبَعِيْنَ صَبَاحًا **अल्लाह** तआ़ला चालीस दिन तक उस की नमाज़ क़बूल न फ़रमाएगा, और अगर हज़्ल व इस्तिहज़ा (या'नी हंसी मज़ाक़ के त़ौर पर) हो तो अ़बस (या'नी बेकार) व मकरूह व ह़माक़त है, हां ! अगर ब क़स्दे ता'जीज़ (या'नी उसे आ़जिज़ करने के लिये) हो तो ह़रज नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, 21/155)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) जादू करने करवाने वाला हम से नहीं

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है :

لَيْسَ مِنَّا مَنْ تَطَيَّرَ اَوْ تُطُيِّرَ لَهٗ اَوْ مَنْ تَكَهَّنَ اَوْ تُكُهِّنَ لَهٗ اَوْ مَنْ سَحَرَ اَوْ سُحِرَ لَهٗ

या'नी जिस ने बद शुगूनी ली या जिस के लिये बद शुगूनी ली गई या जिस ने कहानत की या जिस के लिये की गई या जादू करने और करवाने वाला हम से नहीं।

(مسند بزار، اول حدیث عمران بن حصین،۹/۵۲،حدیث:۳۵۷۸)

जादू क्या है ?

शरीअ़त में सेह़र (जादू) के मा'ना हैं ख़ुफ़्या त़ौर पर किसी चीज़ को ख़िलाफ़े अस्ल ज़ाहिर करना। (तफ़्सीरे नईमी, 1/571)

जादू की एक ता'रीफ़ येह भी है कि किसी शरीर और बदकार शख़्स का मख़्सूस अ़मल के ज़रीए़ आम आ़दत के ख़िलाफ़ कोई काम करना जादू कहलाता है।

(شرح المقاصد، المقصد السادس، الفصل الاول فی النبوۃ، ٥/٧٩)

बनी इस्राईल को जादू सीखने से रोका (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने में बनी इस्राईल जादू सीखने में मश्ग़ूल हुवे तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन को इस से रोका और उन की किताबें ले कर अपनी कुरसी के नीचे दफ़्न कर दीं। ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ात के बा'द शयात़ीन ने वोह किताबें निकाल कर लोगों से कहा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इसी के ज़ोर से सल्त़नत करते थे। बनी इस्राईल के नेक लोगों और उ़लमा ने तो उस का इन्कार किया लेकिन उन के जाहिल लोग जादू को ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इ़ल्म मान कर उस के सीखने पर टूट पड़े, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की किताबें छोड़ दीं और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर मलामत शुरूअ़ की। हमारे आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने तक येही ह़ाल रहा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की जादू से बराअत का इज़्हार फ़रमाया।

(خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ :١٠٢، ١/٧٣)

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है : जादू फ़रमां बरदार और ना फ़रमान लोगों के दरमियान इम्तियाज़ करने और लोगों की आज़्माइश के लिये नाज़िल हुवा है, जो इस को सीख कर इस पर

अ़मल करे काफ़िर हो जाएगा बशर्ते़ कि इस जादू में ईमान के ख़िलाफ़ कलिमात और अफ़्आ़ल हों और अगर कुफ़्रिय्या कलिमात व अफ़्आ़ल न हों तो कुफ़्र का हुक्म नहीं है। (सिरातुल जिनान, 1/179)

किसी ने जादू करवा दिया है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! घर में बीमारी, परेशानी या बे रोज़गारी हो तो आज कल अक्सर वस्वसा आता है कि शायद किसी ने जादू करवा दिया है, लिहाज़ा बाबाजी (ता'वीज़ धागे देने वाले) से राबिता़ किया जाता है, बिलफ़र्ज़ बाबाजी बता दें कि तुम्हारे क़रीबी रिश्तेदार ने जादू करवाया है तो उ़मूमन बहू या भाभी की शामत आ जाती है। बा'ज़ औक़ात बाबाजी जादू करने वाले या वाली के नाम का पहला ह़र्फ़ बल्कि नाम ही बता देते हैं ! कभी कभी तो सुइयों वाला माश के आटे का पुत्ला और ता'वीज़ वग़ैरा भी घर से बर आमद हो जाता है। और फिर लोग ऐसे ''बाबाजी'' पर अन्धा भरोसा कर लेते हैं और ख़ानदान भर में ग़ीबत व बोहतान तराशी का बद तरीन सिलसिला चल निकलता और नतीजतन हरा भरा लहलहाता ख़ानदान ताख़्तो ताराज हो कर रह जाता है। याद रखिये ! बिला सुबूते शरई सिर्फ़ आ़मिलों और बाबाओं के कहने पर अगर आप ने किसी से कहा : मसलन हमारी भाभी जादू करवाती है तो येह बोहतान, गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम हुवा और अगर किसी ने छुप कर वाक़ेई जादू करवा भी दिया हो और आप को यक़ीनी तौ़र पर पता चल गया हो तब भी उस मख़्सूस फ़र्द का जादू के ह़वाले से बिला मस्लह़ते शरई किसी से तज़्किरा करना ग़ीबत है। ख़याल रहे ! आ़मिलों या बाबाओं का बताना शरई सुबूत नहीं कहलाता।

(ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 225)

जादू से हिफ़ाज़त के तीन मदनी फूल

(1) सूरए फ़लक़ और सूरए नास की तिलावत (हिकायत)

हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा इब्ने आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जुह़्फ़ा और अब्वा के दरमियान सफ़र कर रहा था कि अचानक हमें आंधी और सख़्त तारीकी ने घेर लिया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "सूरतुल फ़लक़" और "सूरतुन्नास" के ज़रीए पनाह मांगी और फ़रमाने लगे : ऐ उ़क़्बा ! इन दोनों सूरतों के साथ पनाह मांगा करो कि किसी ने इन दोनों के साथ पनाह मांगने वाले की त़रह़ पनाह नहीं मांगी।

(ابوداوٗد،کتاب الوتر،باب فی المعوذتین،۲/۱۰٤،حدیث:۱٤٦۳)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि येह दोनों सूरतें सिर्फ़ जादू के लिये ही नहीं बल्कि दूसरी आफ़तों में भी काम आती हैं अगर इन का ता'वीज़ लिख कर साथ रखा जाए तो भी अमान मिलती है कुरआनी आयात से ता'वीज़ जाइज़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/252)

(2) रोज़ाना अ़ज्वा खजूर खाने वाला जादू से मह़फ़ूज़ रहे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जो कोई सुब्ह़ सवेरे सात अ़ज्वा छूहारे खाए तो उसे उस दिन ज़हर और जादू नुक़्सान न देगा। (بخاری، کتاب الاطعمہ،باب العجوۃ،۳/٥٤۰،حدیث:٥٤٤٥)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : अ़ज्वा मदीनए मुनव्वरा के आ'ला क़िस्म के छूहारे हैं। इन का रंग सियाह होता है इन पर कुछ धारियां क़ुदरती होती हैं। अ़वालिये मदीना में एक बाग़ है। जिस में अ़ज्वा के दो दरख़्त ऐसे हैं जिन्हें हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस से लगाया, अब कुछ कम फल देते हैं फ़क़ीर ने इन दरख़्तों को बोसा दिया है और उस के फल के 11 दाने अपने साथ लाया था। इस का एक दाना एक रियाल का मिलता है, वाक़ेई अ़ज्वा खजूर में येह तासीर है मगर अ़ज्वा मदीनए मुनव्वरा का हो। (मिर्क़ात) (मिरआतुल मनाजीह़, 6/23)

(3) साल भर जादू से हिफ़ाज़त

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : अगर इस रात (या'नी शबे बराअत) को सात पत्ते बेरी (या'नी बेर के दरख़्त) के पानी में जोश दे कर (जब पानी नहाने के क़ाबिल हो जाए तो) ग़ुस्ल करे तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ الْعَزِيْز तमाम साल जादू के असर से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 135)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जादू टोना करवाने का इल्ज़ाम

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** में ब सूरते सुवाल जवाब तह़रीर फ़रमाते हैं :

सुवाल : आज कल आ़मिल की बातों में आ कर रिश्तेदार एक दूसरे के बारे में जादू का बोहतान रख देते हैं येह कैसा है ?

जवाब : किसी मुसलमान पर बोहतान रखना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। आ़मिल के बताने या ख़्वाब या फ़ाल या इस्तिख़ारे के ज़रीए़ पता चलने को शरई सुबूत नहीं कहते कि जिस को बुन्याद बना कर किसी मुसलमान की त़रफ़ इन गुनाहों को मन्सूब किया जा सके। यहां शरई सुबूत येह है कि या तो मुल्ज़िम ख़ुद इक़्रार कर ले कि मैं ने जादू किया या करवाया है, या दो मुसलमान मर्द या एक मुसलमान मर्द और दो मुसलमान औ़रतें गवाही दें कि हम ने इस को ख़ुद जादू करते या करवाते देखा है। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 391)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) मुसलमान को धोका देने वाला हम से नहीं

अल्लाह के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ غَشَّنَا فَلَيْسَ مِنَّا या'नी जिस ने हमारे साथ धोका किया वोह हम से नहीं।

(مسلم،کتاب الایمان، باب قول النبی ۔۔۔الخ، ص٦٥، حدیث: ۱۰۱)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : غَشَّنَا में ज़मीरे मुतकल्लिम से मुराद सारे मुसलमान हैं या अहले अ़रब या अहले मदीना या'नी जिस ने मुसलमानों को या अहले अ़रब को अहले मदीना को धोका दिया वोह हमारी जमाअ़त से नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/254)

धोका किसे कहते हैं ?

हज़रते अल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "फ़ैज़ुल क़दीर शर्हे जामेउ़स्सग़ीर" में लिखते हैं : اَلْغِشُّ سَتْرُ حَالِ الشَّیْءِ या'नी किसी चीज़ की (अस्ली) ह़ालत को पोशीदा रखना धोका है। (فیض القدیر،٦/ ٢٤٠،تحت الحدیث:٨٨٧٩) तीसरी सदी हिजरी के जलीलुल क़द्र मुह़द्दिस, फ़क़ीह और कसीर किताबों के मुसन्निफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन इस्ह़ाक़ बग़दादी ह़र्बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : فَالغِشُّ أَنْ یُظْهِرَ شَیْئًا وَیَخْفِی خِلَافَهُ أَوْ یَقُولَ قَوْلاً وَیَخْفِی خِلَافَهُ या'नी धोका येह है कि कोई शख़्स किसी चीज़ को ज़ाहिर करे और इस के ख़िलाफ़ (या'नी ह़क़ीक़त) को छुपाए या कोई बात कहे और इस के ख़िलाफ़ (या'नी ह़क़ीक़ी बात) को छुपाए। (غریب الحدیث للحربی،٢/ ٦٥٨) मसलन किसी ऐबदार चीज़ को उस का ऐब छुपा कर बेचना, जा'ली या मिलावट वाली चीज़ों को अस्ली और ख़ालिस कह कर बेचना वग़ैरा।

गोश्त को फूंक कर मोटा न करो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने गोश्त फ़रोशों से इरशाद फ़रमाया : يَامَعْشَرَالْقَصَّابِيْنَ لَا تَنْفِخُوْا فَمَنْ نَفَخَ اللَّحْمَ فَلَيْسَ مِنَّا या'नी ऐ गोश्त फ़रोशो ! गोश्त को फूंक कर मोटा न करो जिस ने ऐसा किया वोह हम से नहीं। (کنزالعمال،کتاب البیوع،قسم الافعال،٢/ ٦٥،جزء٤،حدیث:٩٩٦٥)

तिजारती चीज़ का ऐ़ब छुपाना गुनाह है (हि़कायत)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : एक बार ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ल्ले के बाज़ार में तशरीफ़ ले गए तो किसी दुकान पर गन्दुम या जव या किसी और ग़ल्ले का ढेर था, ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस ढेर में अपना हाथ शरीफ़ दाख़िल किया तो पता लगा कि ढेर के ऊपर तो ग़ल्ला सूखा हुवा है मगर अन्दर से गीला है तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "गीले ग़ल्ले को तू ने ढेर के ऊपर क्यूं न डाला ताकि इसे लोग देख लेते जो मिलावट करे वोह हम में से नहीं" ग़ालिबन दुकानदार को येह ख़बर न थी कि येह भी जुर्म है, वोह समझे थे कि ख़ुद गीला करना गुनाह है जो बारिश से क़ुदरती त़ौर पर गीला हो जाए इस में हमारा क्या गुनाह ? लिहाज़ा इस से उन सह़ाबी का फ़िस्क़ साबित नहीं होता, नीज़ गुनाह कर लेना और चीज़ है फ़िस्क़ कुछ और येह गुनाह था जिस से तौबा हो गई अगर उस गुनाह पर जम जाते तौबा न करते तो फ़िस्क़ होता, रब तआ़ला फ़रमाता है :

وَلَمۡ یُصِرُّوۡا عَلٰی مَا فَعَلُوۡا وَھُمۡ یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۳۵﴾ (پ٤، آل عمران:١٣٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न जाएं ।*

इस वाक़िए़ से दो मस्अले मा'लूम हुवे : एक येह कि तिजारती चीज़ का ऐ़ब छुपाना गुनाह है बल्कि ख़रीदार को ऐ़ब पर मुत्त़लअ़ कर दे कि वोह चाहे तो ऐ़बदार समझ कर ख़रीदे चाहे न ख़रीदे । दूसरे येह कि ह़ाकिम या बादशाह का बाज़ार में गश्त

करना, दुकानदारों से उन की चीज़ों की, बाट–तराज़ू की तह्क़ीक़ात करना, क़ुसूर साबित होने पर उन्हें सज़ा देना सुन्नत है, आज जो येह तह्क़ीक़ात हुक्काम करते हैं येह ह़दीस से साबित है। येह भी मा'लूम हुवा कि तिजारती चीज़ में ऐ़ब पैदा करना भी जुर्म है और क़ुदरती पैदा शुदा ऐ़ब को छुपाना भी जुर्म।

(मिरआतुल मनाजीह़, 4/272, मुलख़्ख़सन)

गोश्त फ़रोशो के लिये एह्तियातें

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ लिखते हैं : अक्सर गोश्त बेचने वाले आज कल बहुत सारी ग़लतियां कर के गुनाह कमाते और अपनी रोज़ी ख़राब कर डालते हैं। मिन जुम्ला बर्फ़ ख़ाने के निकाले हुवे बासी गोश्त को ताज़ा कह कर फ़रोख़्त करना, ढांडे (बूढ़े बेल) या बूढ़ी भेंस या बूढ़े भेंसे के गोश्त को बछ्या (या'नी नौ उ़म्र गाए) का गोश्त कह कर बेचना या बूढ़ी गाए या बछड़े की रान पर किसी और बछ्या के छोटे छोटे थन लगा कर धोका दे कर फ़रोख़्त करना, जिन हड्डियों और छीछड़ों को फेंक देने का उ़र्फ़ (रवाज) है उन को धोके से वज़्न में चला देना, गोश्त या क़ीमे को बिग़ैर तोले सिर्फ़ अन्दाज़े से तोल के नाम पर देना, (मसलन किसी ने आध पाव क़ीमा मांगा तो मुठ्ठी में ले कर वज़्न किये बिग़ैर ही बत़ौरे आध पाव दे दिया) वग़ैरा गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 599)

अन्दाज़े से तोलने की मुमानअ़त

सुवाल : अभी आप ने क़ीमा अन्दाज़े से तोलने की मुमानअ़त फ़रमाई। इस में तो आज़माइश है क्यूंकि कई चीज़ें

आज कल अन्दाज़े से ही तोल कर देने का उ़र्फ़ (या'नी रवाज) है, तो क्या लेने वाला भी गुनहगार है ?

जवाब : जी हां ! अगर तोल के नाम पर अन्दाज़े से ख़रीदा तो लेने वाला भी गुनहगार है। इस से बचने का एक त़रीक़ा येह भी है कि जो चीज़ें तोल के नाम पर बिग़ैर तोले आज कल दी जाती हैं वोह आप तोल के नाम पर न मांगे बल्कि उस की क़ीमत कह दें मसलन कहें, मुझे 5 रूपे की दही दे दो, या 12 रूपे का क़ीमा दे दो। अब वोह जिस त़रह़ भी दे, दोनों गुनाह से बच गए। (ऐज़न)

उ़म्दा गोश्त की पहचान

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ अपनी मश्हूरे ज़माना तसनीफ़ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" के बाब आदाबे त़आ़म में उ़म्दा गोश्त की पहचान के बारे में इरशाद फ़रमाते हैं : बूढ़ा गोश्त लाल होता है, जब कि जवान गोश्त मटियाले (भूरे) रंग का और इस में उ़मूमन चर्बी कम होती है। भूरा गोश्त ज़ियादा अच्छा होता है। घर के लिये आख़िरी बचा हुवा गोश्त ख़रीदना मुफ़ीद हो सकता है क्यूंकि बेचने वाले जल्दी जल्दी चर्बी और हड्डियां तोल में चला देते हैं और यूं आख़िर के बचे हुवे गोश्त में बोटी ज़ियादा होती है ! सब्ज़ियों और फलों का मुआ़मला इस से उलट है कि ताज़ा और उ़म्दा जल्दी जल्दी बिक जाते और आख़िर में गले सड़े बच रहते हैं। इन मा'नों कर येह मक़ूला दुरुस्त है कि सब्ज़ी और फल शुरूअ़ में और गोश्त आख़िर में ख़रीदो।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 594)

धोकेबाज़ बीवी

हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन रूमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मस्नवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं : एक शख़्स मेहमानों को खिलाने के लिये आधा सेर गोश्त ख़रीद कर लाया और पकाने के लिये बीवी को दिया, उस की बीवी बहुत चालाक और नख़रेबाज़ थी, वोह जो कुछ घर में लाता बरबाद कर देती, उस का शोहर भी उस से बहुत तंग था। बीवी ने गोश्त भूना और मेहमानों के बजाए ख़ुद खा गई। शोहर ने आ कर पूछा : गोश्त कहां है ? मेहमानों को खिलाना है। बीवी ने ढिटाई से झूट बोला : वोह गोश्त तो बिल्ली खा गई, चाहिये तो और ले आओ। वोह आदमी बीवी की येह बात सुन कर ग़ुस्से में नौकर से बोला : तराज़ू लाओ ! मैं बिल्ली का वज़्न करूंगा। जब उस ने बिल्ली को तोला तो वोह आधा सेर थी, येह देख कर शोहर बोला : ऐ चालबाज़ औ़रत ! मैं आधा सेर गोश्त लाया था, इस बिल्ली का वज़्न भी आधा सेर है, अगर येह गोश्त है तो बिल्ली कहां है और अगर येह बिल्ली है तो गोश्त कहां है ?

(انوار العلوم مثنوی مولانا روم، دفتر پنجم ص ۵۳۳ ماخوذاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) जो हम पर तल्वार उठाए वोह हम से नहीं

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : مَنْ سَلَّ عَلَیْنَا السَّیْفَ فَلَیْسَ مِنَّا या'नी जो हम पर तल्वार सोंते वोह हम से नहीं।

(مسلم، کتاب الایمان، باب قول النبی من حمل علینا السلاح، ص ٦٥، حدیث: ٩٩)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : जो शख़्स किसी मुसलमान पर तल्वार सोंत ले अगर्चे उस के क़त्ल का इरादा न भी करे तब भी मुसलमानों की जमाअ़त (या'नी त़रीक़े) से ख़ारिज है क्यूंकि उस ने मुसलमानों का सा काम न किया, मुसलमान पर ज़ुल्मन हथयार उठाना भी ह़राम है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/254)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(10) जो बुराई से मन्अ़ न करे वोह हम से नहीं

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَّمْ يَرْحَمْ صَغِيْرَنَا وَيُوَقِّرْ كَبِيْرَنَا وَيَأْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَ عَنِ الْمُنْكَر

या'नी जो हमारे छोटों पर रह़्म न करे, हमारे बड़ों की ता'ज़ीम न करे, अच्छी बातों का हुक्म न करे और बुरी बातों से मन्अ़ न करे वोह हम से नहीं।

(ترمذی،کتاب البر والصلة،باب ما جاء فی رحمة الصبیان،۳/۳٦۹، حدیث: ۱۹۲۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस हिस्से (जो हमारे छोटों पर रह़्म न करे, हमारे बड़ों की ता'ज़ीम न करे) के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी अपने से छोटों पर रह़्म न करे, अपने से बड़ों का अदब न करे, छोटाई बड़ाई ख़्वाह उ़म्र की हो ख़्वाह इ़ल्म की ख़्वाह दरजे की ! येह फ़रमान बहुत आ़म है। ख़याल रहे صَغِيْرَنَا और كَبِيْرَنَا

फ़रमा कर येह बताया कि छोटे बड़े मुसलमानों का अदब इन पर रह्म (करना) चाहिये येह क़ैद भी ज़ियादतिये एहतिमाम के लिये है वरना काफ़िर मां बाप का भी मादरी अदब, काफ़िर छोटे भाई पर भी क़राबत दारी का रह्म चाहिये जैसा कि फ़ुक़हा के फ़रामीन और दूसरी रिवायात से मा'लूम होता है यूं ही उन के हुक़ूक़े क़राबत अदा करे। (अशिअ़आ़)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (अच्छी बातों का हुक्म न करे और बुरी बातों से मन्अ़ न करे) के तह़्त फ़रमाते हैं : हर शख़्स अपनी ताक़त और अपने इल्म के मुताबिक़ दीनी अह़काम लोगों में जारी करे येह सिर्फ़ उ़लमा का ही फ़र्ज़ नहीं सब पर लाज़िम है। ह़ाकिम हाथ से बुराइयां रोके, आ़लिम आ़म ज़बानी तब्लीग़ से येह फ़र्ज़ अन्जाम दे फ़ी ज़माना इस से बहुत ग़फ़्लत है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/560)

बद दुआ़ के बजाए दुआ़ फ़रमाई (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम अत़रूश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی एक दिन बग़दाद शरीफ़ में दरयाए दिजला के किनारे तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक कश्ती में सुवार चन्द नौजवान हमारे पास से गुज़रे जो गाने बजाने और शराब नोशी में मसरूफ़ थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के साथ मौजूद ह़ज़रात ने अ़र्ज़ की : क्या आप नहीं देखते कि येह लोग खुले आ़म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में मश्ग़ूल हैं, इन के लिये बद दुआ़ फ़रमाइये। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आस्मान की त़रफ़

हाथ बुलन्द फ़रमाए और बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : ऐ मेरे मालिको मौला ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि जिस त़रह़ तू ने इन्हें दुन्या में ख़ुश रखा है इसी त़रह़ इन्हें आख़िरत में भी ख़ुश व ख़ुर्रम रखना। साथियों ने अ़र्ज़ की : हम ने तो आप से इन के लिये बद दुआ़ करने की गुज़ारिश की थी न कि दुआ़ करने की। इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर इन्हें आख़िरत में ख़ुश रखना चाहेगा तो दुन्या में तौबा की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाएगा और इस में तुम्हारा कोई नुक़्सान नहीं है।

(احیاء علوم الدین،کتاب الخوف والرجاء،بیان فضیلۃ الرجاء،۱۹۰/٤)

मैं और तुम क़ियामत में यूं आएंगे

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : बड़ों की इ़ज़्ज़त करो, छोटों पर रह़म करो मैं और तुम क़ियामत में यूं आएंगे। **रसूले अकरम**, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उंगलियों को एक साथ मिलाया।

(المطالب العالیہ،کتاب الرقاق،باب الوصایا النافعۃ،۵۷۰/۷،حدیث:۳۱٤۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(11) लोगों का माल लूटने वाला हम से नहीं

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : مَنِ انْتَهَبَ نُهْبَةً مَشْهُوْرَةً فَلَيْسَ مِنَّا या'नी जो सरे आ़म लूट मचाए वोह हम से नहीं।

(ابو داؤد،کتاب الحدود،باب القطع فی الخلسۃ،١٨٤/٤،حدیث:٤٣٩١)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان हदीसे पाक के इस हिस्से "जो सरे आम लूट मचाए" के तहत फ़रमाते हैं : या'नी जो ज़ालिम खुले बन्दों लोगों का माल छीन ले और लोग मुंह तकते रह जाएं ऐसा ज़ालिम हमारे त़रीक़े हमारी जमाअ़त से ख़ारिज है, इस्लाम से निकल जाना मुराद नहीं कि येह जुर्म फ़सादे अ़मल है फ़सादे अ़क़ीदा नहीं। ख़याल रहे कि डाकू के हाथ न कटेंगे बल्कि डकेती की सज़ाएं मुख़्तलिफ़ हैं बा'ज़ सूरतों में उस को सूली दी जाएगी।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/305)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान तो मुसलमान ! इस्लाम में किसी ग़ैर मुस्लिम का माल भी ज़बरदस्ती लेने की इजाज़त नहीं है। चुनान्चे, **आ'ला ह़ज़रत,** मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से "**फ़तावा रज़विय्या शरीफ़**" में एक सुवाल हुवा : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि हिन्दू का माल मुसलमान ज़बरदस्ती खा सकता है या नहीं ? तो जवाब दिया : ज़बरदस्ती माल खाने वाले एक दिन बड़ा घर (क़ैद ख़ाना) देखते हैं। واللّٰه تعالٰی اعلم (फ़तावा रज़विय्या, 19/687)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(12) मुसलमान के साथ बद दियानती करने वाला हम से नहीं

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ مِنَّا مَنْ غَشَّ مُسْلِمًا اَوْضَرَّهٗ اَوْ مَاكَرَهٗ

या'नी जिस ने किसी मुसलमान के साथ बद दियानती की या उसे नुक़्सान पहुंचाया या धोका दिया वोह हम से नहीं।

(جامع الاحادیث،٦/١٩٠،حدیث:١٨٠٩٦)

क़ीमत बढ़ जाने पर भी न बढ़ाई

हज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने बादामों का एक "कुर्र" (एक पैमाने का नाम) 60 दीनार में ख़रीदा और अपने रोज़ नामचे (हर रोज़ का हिसाब लिखने की किताब) में उस का नफ़्अ़ तीन दीनार लिख दिया, गोया कि उन्हों ने हर दस दीनार पर सिर्फ़ आधा दीनार नफ़्अ़ लेना बेहतर ख़याल फ़रमाया। कुछ ही दिनों में बादामों का एक "कुर्र" 90 दीनार का हो गया। दल्लाल (कमीशन एजन्ट /Commission Agent) आया और उस ने बादाम तलब किये, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ले लो ! उस ने पूछा : कितने के ? फ़रमाया : 63 दीनार के। दल्लाल भी नेक लोगों में से था, उस ने कहा : इस वक़्त येह बादाम 90 दीनार के हो चुके हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने एक अ़ह्द किया है जिसे मैं हरगिज़ नहीं तोड़ सकता, लिहाज़ा मैं इन्हें 63 दीनार में ही फ़रोख़्त करूंगा। दल्लाल ने जवाब दिया : मैं ने भी अपने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के माबैन इस बात का अ़ह्द कर रखा है कि किसी मुसलमान को धोका नहीं दूंगा। इस लिये मैं आप से येह बादाम 90 दीनार में ही ख़रीदूंगा। (احیاء علوم الدین، ٢ /١٠٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला हम सब को मुसलमानों का ख़ैर ख़्वाह बनाए, उन को नुक़्सान पहुंचाने या धोका देने से बचाए। जो ख़ुश नसीब दा'वते इस्लामी के मदनी

माहोल से वाबस्ता हो जाता है वोह लोगों को तक्लीफ़ देने, मुसलमानों का माल लूटने जैसे बड़े बड़े गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बन जाता है, चुनान्चे,

मैं चोरियां करता था

(पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई अपनी ज़िन्दगी के साबिक़ा अह़वाल कुछ इस त़रह़ क़लम बन्द करते हैं : घर में मज़हबी माहोल होने के बा वुजूद अफ़्सोस इस्लामी अह़काम की बजा आवरी से कोसों दूर था। **चन्द रूपे की ख़ात़िर चोरियां करना, राहगीरों की जेबें साफ़ करना और उन के माल को हड़प कर जाना मेरा शेवा बन चुका था।** शायद येह अच्छी सोहबत से दूरी का नतीजा था जिस की वज्ह से मैं बुराइयों के समन्दर में डूबता जा रहा था। हुवा कुछ इस त़रह़ कि मदनी माहोल से मुन्सलिक एक बा इमामा इस्लामी भाई जो सफ़ेद लिबास ज़ेबे तन किये हुवे थे मेरे पास तशरीफ़ लाए और निहायत ही मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में सलाम व मुसाफ़ह़ा करने के बा'द मुझे नेकी की दा'वत देने लगे और आख़िरत की हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी को संवारने के लिये आ'माले सालेह़ा करने की तरग़ीब दिलाने लगे। दौराने गुफ़्तगू ब ज़रीअ़ए इनफ़िरादी कोशिश उन्हों ने मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत दी। यूं इजतिमाअ़ की ह़ाज़िरी का सिलसिला शुरूअ़ हो गया। इजतिमाअ़ की बरकत से आहिस्ता आहिस्ता दा'वते इस्लामी की मह़ब्बत दिल में घर करती चली गई। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का नूरानी

जल्वा ख़्वाब में देखा तो मेरा ईमान ताज़ा हो गया। आप इन्तिहाई सादा मगर साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ लिबास ज़ेबे तन किये और सब्ज़ इमामे का ताज सजाए हुवे थे, आप के चेहरे पर बुज़ुर्गी के आसार नुमायां नज़र आ रहे थे, फिर वोह वक़्त भी आया कि मैं ने सर की आंखों से दीदारे अमीरे अहले सुन्नत का शरफ़ पाया, दौलते दीदार मिलने के बा'द निस्बते अ़त्तार से मुशर्रफ़ होने के लिये बे क़रार हो गया और जल्द ही आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दामन से वाबस्ता हो कर अ़त्तारी बन गया। निस्बते अ़त्तार हि़स्से में क्या आई मेरी ज़िन्दगी में सुन्नतों की बहार आ गई, चेहरे पर दाढ़ी सजा ली, सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ पहन लिया और मदनी हुल्या भी अपना लिया। ता दमे तह़रीर शहर मुशावरत में मदनी इन्आ़मात का ज़िम्मेदार हूं और मदनी काम करने के लिये कोशां हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(13) उ़लमा का ह़क़ न पहचानने वाला मेरी उम्मत से नहीं

रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : لَيْسَ مِنْ أُمَّتِيْ مَنْ لَمْ يُجِلَّ كَبِيْرَنَا وَيَرْحَمْ صَغِيْرَنَا وَيَعْرِفْ لِعَالِمِنَا حَقَّه या'नी जो हमारे बड़ों का ह़क़ न पहचाने, हमारे छोटों पर रह़म न करे और हमारे उ़लमा का ह़क़ न पहचाने (या'नी उन का एह़तिराम न करे) वोह मेरी उम्मत से नहीं। (مسند احمد،مسند الانصار،٨/٤١٢،حديث:٢٢٨١٩)

तीन शख़्स ऐसे हैं जिन के हुक़ूक़ को मुनाफ़िक़ ही हल्का जानेगा

महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन शख़्स ऐसे हैं जिन के

हुकूक़ को मुनाफ़िक़ ही हल्का जानेगा (1) जिसे इस्लाम में बुढ़ापा आया (2) आ़लिमे दीन और (3) इन्साफ़ पसन्द बादशाह। (المعجم الكبير،٢٠٢/٨،حديث:٧٨١٩)

बादशाही तो इसे कहते हैं (हिकायत)

ख़लीफ़ा हारून रशीद अपने लश्कर के साथ शहरे रिक़्क़ह में पडाव किये हुवे था, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का वहां से गुज़र हुवा तो इस क़दर हुजूम हुवा कि लोगों की जूतियां टूटने लगीं और उफ़ुक़ गुबार आलूद हो गया, ख़लीफ़ा की एक कनीज़ मह़ल के बुर्ज से येह अ़ज़ीमुश्शान मन्ज़र देख रही थी, हैरानी के आ़लम में पूछने लगी : येह क्या हुवा है ? लोगों ने बताया कि ख़ुरासान शहर के आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रिक़्क़ह तशरीफ़ लाए हैं और येह तमाम अफ़राद उन के इस्तिक़्बाल के लिये जम्अ़ हुवे हैं, येह सुन कर वोह कनीज़ बे साख़्ता पुकार उठी : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बादशाही तो इसे कहते हैं, हारून की हुकूमत क्या है इस के लिये तो लोग हुकूमती कारन्दों के दबाव में आ कर जम्अ़ होते हैं। (تاريخ بغداد،١٠/١٥٥)

शुरफ़ा की इ़ज़्ज़त और अहले इ़ल्म की ता'ज़ीमो तौक़ीर करना

करोड़ों ह़नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा, सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़्ख़म ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने शागिर्दे रशीद इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को वसिय्यत करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

तुम हर शख़्स को उस के मर्तबे के लिहाज़ से इ़ज़्ज़त देना, **शुरफ़ा की इ़ज़्ज़त और अहले इ़ल्म की ता'ज़ीमो तौक़ीर करना, बड़ों का अदबो एह़तिराम और छोटों से प्यार व मह़ब्बत करना** । आ़म लोगों से तअ़ल्लुक़ क़ाइम करना, फ़ासिक़ो फ़ाजिर को ज़लीलो रुस्वा न करना, अच्छे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करना, सुल्त़ान की इहानत करने से बचना, किसी को भी ह़क़ीर न समझना, अपने अख़्लाक़ व आ़दात में कोताही न करना, किसी पर अपना राज़ ज़ाहिर न करना, बिग़ैर आज़माए किसी की सोह़बत पर भरोसा न करना, किसी ज़लील व घटया शख़्स की ता'रीफ़ न करना और किसी ऐसी चीज़ से मह़ब्बत न करना जो तुम्हारे ज़ाहिरी ह़ाल के ख़िलाफ़ हो । (इमामे आ'ज़म की वसिय्यतें, स. 27)

आ़लिम की इ़ज़्ज़त (ह़िकायत)

ख़लीफ़ए बग़दाद हारून रशीद ने एक मरतबा मश्हूर आ़लिमे ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुआ़विया मुह़म्मद ज़रीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر की दा'वत की । वोह आंखों से मा'ज़ूर थे जब लोटा और चिलमची हाथ धुलाने के लिये लाई गई तो ख़लीफ़ा ने चिलमची तो ख़िदमत गार को दी और ख़ुद लोटा हाथ में ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुआ़विया मुह़म्मद ज़रीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر का हाथ धुलाने लगा और कहा कि ऐ अबू मुआ़विया ! आप ने पहचाना कि कौन आप के हाथों पर पानी डाल रहा है ? आप ने फ़रमाया : नहीं, ख़लीफ़ा ने कहा : हारून ! येह सुन कर अबू मुआ़विया के दिल से येह दुआ़ निकली कि जैसी आप ने इ़ल्म की इ़ज़्ज़त की ऐसी ही **अल्लाह** तआ़ला आप की इ़ज़्ज़त फ़रमाए, हारून रशीद ने कहा : अबू मुआ़विया ! बस आप की इसी दुआ़ को ह़ासिल करने के लिये मैं ने येह किया था । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 145)

(14) बे सब्री करने वाला हम में से नहीं

ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الْخُدُوْدَ وَشَقَّ الْجُيُوْبَ وَدَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ

या'नी जो अपने मुंह पर त़मांचे मारे, गिरेबान चाक करे और ज़मानए जाहिलिय्यत की त़रह़ वावेला मचाए वोह हम से नहीं ।

(بـخـاری، کتـاب الجنائز، باب لیس منا من ضرب الخدود، ۱/۴۳۹، حدیث: ۱۲۹۷)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : मय्यित वग़ैरा पर मुंह पीटने कपड़े फाड़ने रब तआ़ला की शिकायत बे सब्री की बक्वास करने वाला हमारी जमाअ़त या हमारे त़रीक़े वालों से नहीं है येह काम ह़राम हैं इन का करने वाला सख़्त मुजरिम (है) (मुफ़्ती साहि़ब मज़ीद लिखते हैं :) इस ह़दीस की ताईद क़ुरआने करीम फ़रमा रहा है :

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ الَّذِيْنَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾

(پ۲، البقرة: ۱۵٦)

*(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ख़ुश ख़बरी सुना उन सब्र वालों को कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना ।)*

इसी लिये शुहदाए करबला के अहले बैते अत़्हार (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने ता ज़ीस्त (या'नी ज़िन्दगी भर) येह ह़रकतें न कीं ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/502)

आवाज़ से रोना मन्अ़ है

आवाज़ से रोना मन्अ़ है और आवाज़ बुलन्द न हो तो इस की मुमानअ़त नहीं, बल्कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात पर बुका फ़रमाया।

(बहारे शरीअ़त, 1/855)

आंख आंसू बहाती है और दिल ग़मज़दा है (हिकायत)

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हज़रते अबू सैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर गए तो येह वोह वक़्त था कि हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जांकनी के आ़लम में थे। येह मन्ज़र देख कर ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों से आंसू जारी हो गए। उस वक़्त हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या आप भी रोते हैं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ इब्ने औ़फ़ ! मेरा रोना शफ़्क़त की वज्ह से है। इस के बा'द फिर दोबारा जब चश्माने मुबारक से आंसू बहे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक पर येह कलिमात जारी हो गए।

اِنَّ الْعَیْنَ تَدْمَعُ وَ الْقَلْبَ یَحْزَنُ وَلَا نَقُوْلُ اِلَّا مَا یَرْضٰی رَبُّنَا وَاِنَّا بِفِرَاقِكَ یَا اِبْرَاھِیْمُ لَمَحْزُوْنُوْنَ

या'नी आंख आंसू बहाती है और दिल ग़मज़दा है मगर हम वोही बात ज़बान से निकालते हैं जिस से हमारा रब عَزَّوَجَلَّ ख़ुश

हो जाए और बिलाशुबा ऐ इब्राहीम ! हम तुम्हारी जुदाई से बहुत ज़ियादा ग़मगीन हैं ।

(بخاری،کتاب الجنائز،باب قول النبی انا بك لمحزونون،۱/۴۴۱،حدیث:۱۳۰۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गन्धक का कुर्ता और ख़ुजली का दूपट्टा

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : चिल्ला कर रोने वाली जब अपनी मौत से क़ब्ल तौबा न करे तो क़ियामत के दिन यूं खड़ी की जाएगी कि उस के बदन पर गन्धक का कुर्ता होगा और ख़ुजली का दूपट्टा ।

(مسلم،کتاب الجنائز،باب التشدید فی النیاحة،ص٤٦٥،حدیث:٩٣٤)

कुत्ते की त़रह भोंकेंगी

ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : उन नौह़ा करने वाली औ़रतों को क़ियामत के दिन जहन्नम में दो सफ़ों में खड़ा किया जाएगा, एक सफ़ जहन्नमियों की दाईं जानिब जब कि दूसरी बाईं जानिब होगी, येह वहां ऐसे भोंकेंगी जैसे कुत्ते भोंकते हैं ।

(المعجم الاوسط،٤/٦٦،حدیث:٥٢٢٩)

क्या अ़ज़ीज़ की मौत पर सब्र करना मुश्किल है ? (हि़कायत)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़ह़ा 404 पर है कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से **अ़र्ज़** की गई कि अगर बे इख़्तियारी में अपने अ़ज़ीज़ की मौत पर सब्र न करे तो जाइज़ होगा ? **इरशाद** फ़रमाया : बे इख़्तियारी बना लेते हैं वरना अगर त़बीअ़त को रोका जाए तो यक़ीन है कि सब्र हो सकता है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लिये जा रहे थे राह में मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि एक औ़रत अपने लड़के की मौत पर नौह़ा कर रही है हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने मन्अ़ फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : "सब्र कर।" वोह अपने ह़ाल में ऐसी बे ख़बर थी कि उस को न मा'लूम हुवा कौन फ़रमा रहे हैं जवाब बे हूदा दिया कि आप तशरीफ़ ले जाएं मुझे मेरे ह़ाल पर छोड़ दें। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तशरीफ़ ले गए बा'द को लोगों ने उस से कहा कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया था। वोह घबराई और फ़ौरन दरबार में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मुझे मा'लूम न हुवा कि हुज़ूर मन्अ़ फ़रमा रहे हैं अब मैं सब्र करती हूं। इरशाद फ़रमाया : اَلصَّبْرُ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الْاُوْلٰى (सब्र पहली ही बार करती तो सवाब मिलता, फिर तो सब्र आ ही जाता है।) (مسلم،کتاب الجنائز،باب فی الصبر۔۔۔الخ،ص ٤٦٠،حدیث:٩٢٦ ملخصا)

इस से मा'लूम हुवा कि अगर आदमी सब्र करे तो हो सकता है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 404)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(15) मुसीबत के वक़्त कपड़े फाड़ने वाला हम से नहीं

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَیْسَ مِنَّا مَنْ حَلَقَ وَمَنْ سَلَقَ وَمَنْ خَرَقَ या'नी जो सर मुन्डाए, चीखें मारे और कपड़े फाड़े वोह हम से नहीं।

(ابوداؤد، کتاب الجنائز، باب فی النوح، ۳/۲۶۰، حدیث: ۳۱۳۰)

सर मुन्डाने से मुराद मौत पर ग़म के लिये सर मुन्डाना मुराद है। मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن "जो सर मुन्डाए" के तह़त लिखते हैं : इस से मा'लूम हो रहा है कि अ़रब में भी किसी की मौत पर सर मुन्डाने का रवाज था। (मुफ़्ती साहि़ब मज़ीद लिखते हैं :) ख़याल रहे कि सह़ाबए किराम ऐसी ह़ालत में तब्लीग़ और अपने बाल बच्चों की इस्लाह़ से ग़ाफ़िल नहीं रहते थे। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/502-503)

मैं उस से बेज़ार हूं

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं उस से बेज़ार हूं जो सर मुन्डाए और चिल्ला कर रोए और गिरेबान चाक करे।

(مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم ضرب الخدود، ص۶۶، حدیث: ۱۰۴)

उ़म्दा कपड़े पहन लिये (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उ़म्दा कपड़े ज़ेबे तन किये, तेल लगाए लोगों के पास आए। वोह आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इस ह़ालत में देख कर बड़े सीख़ पा हुवे और बोले : तुम्हारे बेटे का इन्तिक़ाल हुवा है और तुम इन कपड़ों में और तेल लगाए घूम रहे हो ? फ़रमाया : तो क्या मैं कम हिम्मती का इज़्हार करूं ? मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तीन इन्आ़मात देने का वा'दा फ़रमाया है और हर इन्आ़म मुझे दुन्या व माफ़ीहा से ज़ियादा मह़बूब है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَؕ(۱۵۶) اُولٰٓىٕكَ عَلَیْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رَحْمَةٌ۫ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ(۱۵۷)

(پ۲، البقرۃ: ۱۵۶۔۱۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना। येह लोग हैं जिन पर उन के रब की दुरूदें हैं और रह़मत और येही लोग राह पर हैं।*

(منہاج القاصدین، کتاب الصبر والشکر، ص۱۰۵۵)

ग़म सहने का ज़ेहन बना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें हर मुसीबत पर सब्र करना चाहिये और सवाब का ह़क़दार बनना चाहिये, मुसीबत पर सब्र के लिये ख़ुद को तय्यार करने का एक त़रीक़ा येह भी है कि बड़ी बड़ी मुसीबतों का पहले ही से तसव्वुर कर के सब्र का अ़ज़्म कर लिया जाए। मसलन येह तसव्वुर कर लिया जाए कि अगर घर में मेरे जीते जी किसी की फ़ौतगी हो गई तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं सब्र करूंगा, हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाया करते : "जिस को सब्र न आए वोह तकल्लुफ़न सब्र इख़्तियार करे।" नीज़ प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो तकल्लुफ़न सब्र करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को सब्र अ़त़ा फ़रमा देगा और किसी को सब्र से बढ़ कर ख़ैर और वुस्अ़त वाली चीज़ अ़त़ा नहीं की गई।

(بخاری،کتاب الزکوۃ،باب الاستعفاف عن المسا ئلۃ،۱/۴۹۶،حدیث:۱۴۶۹)

जिन्नात ने ग़म ख़्वारी की (ह़िकायत)

ह़ज़रते अबू ख़लीफ़ा अ़ब्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि मेरा छोटा सा बच्चा फ़ौत हो गया जिस का मुझे बहुत सख़्त सदमा हुवा और मेरी नींद उचाट हो गई। ख़ुदा की क़सम ! मैं एक रात अपने घर में अपने बिस्तर पर था। मेरे इ़लावा घर में कोई न था। मैं अपने बेटे की सोचों में गुम था कि अचानक घर के एक कोने से किसी ने बड़े प्यार से कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ يَا اَبَا خَلِيْفَة मैं ने घबराहट के आ़लम में कहा : وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰه फिर उस ने सूरए आले इ़मरान की आख़िरी आयतें तिलावत कीं जब वोह इस आयत पर पहुंचा :

وَمَا عِنۡدَ اللّٰهِ خَيۡرٌ لِّلۡاَبۡرَارِ ﴿۱۹۸﴾

(پ ٤، آل عمران: ١٩٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो **अल्लाह** के पास है वोह नेकों के लिये सब से भला।*

तो उस ने मुझे पुकारा : “ऐ अबू ख़लीफ़ा !” मैं ने कहा : “लब्बैक” उस ने पूछा : “क्या तुम येह चाहते हो कि सिर्फ़ तुम्हारे बेटे ही के लिये ज़िन्दगी मख़्सूस रहे और दूसरे के लिये नहीं ? क्या तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ज़ियादा शान वाले हो या रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं ? हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साहिबज़ादे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी तो फ़ौत हुवे तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया आंखें आंसू बहा रही हैं दिल ग़मगीन है हमें कोई ऐसी बात नहीं कहनी चाहिये जो **अल्लाह** तआ़ला को नाराज़ कर दे। क्या तुम अपने बेटे को मौत से मह़फ़ूज़ रखना चाहते हो ? जब कि तमाम मख़्लूक़ के लिये मौत लिखी जा चुकी है, या तुम चाहते हो कि तुम मख़्लूक़ के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला की तदबीर को रद कर दो। **अल्लाह** की क़सम ! अगर मौत न होती तो ज़मीन इतनी वसीअ़ न होती अगर दुख और ग़म न होते तो मख़्लूक़ किसी ऐ़श से फ़ाइदा नहीं उठा सकती।” फिर उस ने कहा : “तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है ?” मैं ने पूछा : “तुम कौन हो ? **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए।” उस ने इन्किशाफ़ किया : “मैं तेरे पड़ोसी जिन्नों में से एक हूं।”

(موسوعة امام ابن ابی الدنیا، ٢/٤٥٣، رقم: ٤٠ ملخصا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(16) ग़ैर जिन्स से मुशाबहत करने वाला हम में से नहीं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ مِنَّا مَنْ تَشَبَّهَ بِالرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ وَلَا مَنْ تَشَبَّهَ بِالنِّسَاءِ مِنَ الرِّجَالِ या'नी जो औ़रत मर्दों की और जो मर्द औ़रतों की मुशाबहत इख़्तियार करे वोह हम से नहीं ।

(مسند احمد،مسند عبدالله بن عمرو،٢/٦٤٠،حديث:٦٨٩٢)

सुब्हो शाम ग़ज़ब में होते हैं

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : औ़रतों से मुशाबहत इख़्तियार करने वाले मर्द और मर्दों से मुशाबहत करने वाली औ़रतें सुब्ह़-शाम **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी और उस के ग़ज़ब में होते हैं ।

(شعب الايمان،باب فى تحريم الفروج،٤/٣٥٦،الحديث:٥٣٨٥)

तीन शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे

एक और रिवायत में है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तीन शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे :[1] (1) दय्यूस (2) मर्दानी औ़रतें और (3) शराब का आ़दी । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : शराब के आ़दी को तो हम ने जान लिया, दय्यूस कौन है ? तो

मदीना

1 : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : इस ह़दीस में कलाम उस शख़्स के बारे में है जो इन चीज़ों को ह़लाल जानते हुवे करे, तो ऐसा शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होगा ।

(فيض القدير ، حرف الثاء ، ٣/ ٤٣٠ ، تحت الحديث : ٣٥٣٠)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह शख़्स जो इस बात की परवाह नहीं करता कि उस के घरवालों के पास कौन कौन आता है ? हम ने अ़र्ज़ की : मर्दानी औ़रतें कौन हैं ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो मर्दों की मुशाबहत इख़्तियार करती हैं।

(مجمع الزوائد،كتاب النكاح، باب فيمن يرضى لاهله بالخبث،٤/٥٩٩، حديث:٧٧٢٢)

मर्दाना जूते पहनने वाली मलऊ़न है

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से एक औ़रत के बारे में पूछा गया जो मर्दाना जूता पहनती थी, इस पर ह़दीस रिवायत फ़रमाई कि मर्दों से तशब्बोह करने वालियां मलऊ़न हैं।

(ابوداؤد، كتاب اللباس،باب فى لباس النساء،٤/٨٤،حديث:٤٠٩٩)

मर्द का बाल बढ़ाना कैसा ?

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सीने तक बाल रखना शरअ़न मर्द को ह़राम और औ़रतों से तशब्बोह और ब हुक्मे अह़ादीसे सह़ीह़ा कसीरा مَعَاذَ اللّٰه बाइसे ला'नत है। (फ़तावा रज़विय्या, 6/610) फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 600 पर है : (मर्द को) शानों से नीचे ढलके हुवे औ़रतों के से बाल रखना ह़राम है। मर्द को ज़नानी वज़्अ़ की कोई बात इख़्तियार करना ह़राम है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस पर ला'नत फ़रमाई है।

(17) बदला लेने के ख़ौफ़ से सांप न मारने वाला हम से नहीं

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : مَنْ رَأَى حَيَّةً فَلَمْ يَقْتُلْهَا مَخَافَةَ طَلَبِهَا فَلَيْسَ مِنَّا या'नी जो सांप देखे फिर बदले के ख़ौफ़ से उसे न मारे वोह हम से नहीं।

(المعجم الکبیر،۷/۷۸،حدیث:٦٤٢٥)

क्या सांप को मारने वाले से उस की नागनी बदला लेती है ?

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : या'नी हमारी सुन्नत का तारिक है। पहले जोहलाए अ़रब कहते थे और जोहलाए हिन्द अब तक कहते हैं कि सांप को मारने वाले से उस की नागनी बदला लेती है इस लिये सांप को मत मारो। इस फ़रमाने आ़ली में इसी ख़याल की तरदीद है भला सांपनी या'नी नागन को क्या ख़बर कि किस ने मारा है ? लोगों में मश्हूर है कि मारे हुवे सांप की आंखों में मारने वाले का फ़ोटो आ जाता है उस फ़ोटो से नागन, क़ातिल को पहचान लेती है इस लिये सांप को मार कर उस का सर जला दिया जाता है ताकि आंखों में फ़ोटो न रहे मगर येह भी ग़लत़ है उस का सर जला देना उसे मार डालने के लिये है, वोह लाठी खा कर बेहोश हो जाता है लोग मुर्दा समझ कर छोड़ देते हैं वोह कुछ अ़र्से बा'द फिर होश में आ कर चला जाता है आग में जलाना इस लिये है ताकि वाक़ेई मर जाए। ख़याल रहे कि जब तक सांप उल्टा न पड़ जाए कि पेट ऊपर आ जाए तब तक वोह ज़िन्दा है। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/678)

नुक़्सान देने वाले हैवानात को मारना जाइज़ है

वोह हैवानात जो तक्लीफ़ देते हैं उन को मारना जाइज़ है जैसे काटने वाला कुत्ता, नुक़्सान पहुंचाने वाली बिल्ली । (درمختار،کتاب الخنثی،مسائل شتی،۱۰/۵۱۷) इसी त़रह़ चील, कव्वा, चूहा, गिरगिट, छिपकली, सांप, बिच्छू, खटमल, मच्छर, पिस्सू, मख्खी वग़ैरा ख़बीस व मूज़ी जानवरों का मारना (भी जाइज़ है) अगर्चे ह़रम में हो । (बहारे शरीअ़त, 1/1082)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(18) जिस ने सलाम का जवाब न दिया वोह हम से नहीं

हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ اَجَابَ السَّلَامَ فَهُوَلَهٗ وَمَنْ لَّمْ يُجِبِ السَّلَامَ فَلَيْسَ مِنَّا

या'नी जिस ने सलाम का जवाब दिया सवाब पाएगा और जिस ने सलाम का जवाब न दिया वोह हम से नहीं ।

(الاذکار،کتاب السلام،باب فی آداب ومسائل من السلام، ص۲۰۸، حدیث:۷۰۷)

100 में से 90 रह़मतें किसे मिलती हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कोई मुसलमान सलाम करे तो उस का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले, सलाम व मुलाक़ात की बड़ी फ़ज़ीलत है । चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते हैं और उन में से एक अपने साथी को

सलाम करता है तो उन में से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ज़ियादा महबूब (या'नी प्यारा) वोह होता है जो अपने साथी से ज़ियादा गर्म जोशी से मुलाक़ात करता है, फिर जब वोह मुसाफ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) हैं तो उन पर सौ रह़मतें नाज़िल होती हैं उन में से नव्वे रह़मतें (सलाम में) पहल करने वाले के लिये और दस मुसाफ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाने) में पहल करने वाले के लिये हैं। (مُسنَد البزار،١/٤٣٧، حديث:٣٠٨)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब दो मुसलमान मुलाक़ात के वक़्त आपस में मुसाफ़ह़ा करते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले ही उन की मग़्फ़िरत हो जाती है।

(ترمذی،کتاب الاستئذان والآداب،باب ماجاء فی المصافحة،٤/٣٣٣،حديث:٢٧٣٦)

"रमज़ान" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से सलाम के पांच शरई मसाइल

(1) सलाम का जवाब फ़ौरन देना वाजिब है, बिला उ़ज़्र ताख़ीर की तो गुनहगार हुवा और येह गुनाह जवाब देने से दफ़्अ़ (या'नी दूर) न होगा, बल्कि तौबा करनी होगी।

(2) साइल ने दरवाज़े पर आ कर सलाम किया उस का जवाब देना वाजिब नहीं।

(3) काफ़िर को अगर ह़ाजत की वज्ह से सलाम किया, मसलन सलाम न करने में उस से अन्देशा है तो ह़रज नहीं और ब क़स्दे ता'ज़ीम काफ़िर को हरगिज़ हरगिज़ सलाम न करे कि काफ़िर की ता'ज़ीम कुफ़्र है।

(4) किसी से कह दिया कि फ़ुलां को मेरा सलाम कह देना उस पर सलाम पहुंचाना वाजिब है और जब उस ने सलाम पहुंचाया तो

जवाब यूं दे कि पहले उस पहुंचाने वाले को इस के बा'द उस को जिस ने सलाम भेजा है या'नी येह कहे وَعَلَيْکَ وَعَلَيْهِ السَّلام येह सलाम पहुंचाना उस वक़्त वाजिब है जब उस ने इस का इल्तिज़ाम कर लिया हो या'नी कह दिया हो कि हां तुम्हारा सलाम कह दूंगा कि उस वक़्त येह सलाम उस के पास अमानत है जो उस का ह़क़दार है उस को देना ही होगा वरना येह ब मन्ज़िला वदीअ़त है कि उस पर येह लाज़िम नहीं कि सलाम पहुंचाने वहां जाए। इसी त़रह़ ह़ाजियों से लोग येह कह देते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में मेरा सलाम अ़र्ज़ कर देना येह सलाम भी पहुंचाना वाजिब है (या'नी जब कि इल्तिज़ाम किया हो)।

(5) ख़त़ में सलाम लिखा होता है उस का भी जवाब देना वाजिब है और यहां जवाब दो त़रह़ होता है, एक येह कि ज़बान से जवाब दे, दूसरी सूरत येह है कि सलाम का जवाब लिख कर भेजे। आ'ला ह़ज़रत क़िब्ला قُدِّسَ سِرُّهٗ जब ख़त़ पढ़ा करते तो ख़त़ में जो اَلسَّلَامُ عَلَيْکُمْ लिखा होता है उस का जवाब ज़बान से दे कर बा'द का मज़्मून पढ़ते। (बहारे शरीअ़त, 3/460 ता 464)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(19) पड़ोसी का ह़क़ ज़ाएअ़ करने वाला हम से नहीं

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ يُضِيعُ حَقَّ جَارِهٖ فَلَيْسَ مِنَّا

या'नी जो अपने पड़ोसी का ह़क़ तलफ़ करे "वोह हम से नहीं।"

(المطالب العالیہ، کتاب الادب، باب جمل من الادب،۷/۱۱۸، حدیث:۲۶۰۴)

पड़ोसियों को गोश्त और कपड़े दिया करते

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बक्र رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने पड़ोस के घरों में से दाएं बाएं और आगे पीछे के चालीस चालीस घरों के लोगों पर ख़र्च किया करते थे, ईद के मौक़अ़ पर उन्हें कुरबानी का गोश्त और कपड़े भेजते और हर ईद पर सौ गुलाम आज़ाद किया करते थे। (المستطرف،الباب الثالث والثلاثون، ۲۷٦/۱)

पड़ोसी के ग्यारह हुक़ूक़

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पड़ोसी के ग्यारह ह़क़ हैं (1) जब उसे तुम्हारी मदद की ज़रूरत हो उस की मदद करो (2) अगर मा'मूली क़र्ज़ मांगे दे दो (3) अगर वोह ग़रीब हो तो उस का ख़याल रखो (4) वोह बीमार हो तो मिज़ाज पुर्सी बल्कि ज़रूरत हो, तीमार दारी करो (5) मर जाए तो जनाज़े के साथ जाओ (6) उस की ख़ुशी में ख़ुशी के साथ शिर्कत करो (7) उस के ग़म व मुसीबत में हमदर्दी के साथ शरीक रहो (8) अपना मकान इतना ऊंचा न बनाओ कि उस की हवा रोक दो मगर उस की इजाज़त से (9) घर में फल फ्रूट आए तो उसे हदिय्या भेजते रहो, न भेज सको तो ख़ुफ़्या रखो उस पर ज़ाहिर न होने दो, तुम्हारे बच्चे उस के बच्चों के सामने न खाएं (10) अपने घर के धुवें से उसे तक्लीफ़ न दो (11) अपने घर की छत पर ऐसे न चढ़ो कि उस की बे पर्दगी हो। क़सम उस की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है पड़ोसी के हुक़ूक़ वोह ही अदा कर सकता है जिस पर अल्लाह रह़्म फ़रमाए। (मिर्क़ात) (मुफ़्ती साह़िब मज़ीद लिखते हैं :)

कहा जाता है हमसाया और मांजाया (या'नी सगा भाई) बराबर होने चाहियें। अफ़्सोस येह बातें भूल गए क़ुरआने करीम में पड़ोसी के हुक़ूक़ का ज़िक्र फ़रमाया, बहर ह़ाल पड़ोसी के हुक़ूक़ बहुत हैं इन के अदा की तौफ़ीक़ रब तआ़ला से मांगे।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/52)

अच्छा किया या बुरा ?

एक शख़्स ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा अ़ज़मत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे क्यूंकर मा'लूम हो कि मैं ने अच्छा किया या बुरा ? इरशाद फ़रमाया : जब तुम पड़ोसियों को येह कहते सुनो कि तुम ने अच्छा किया तो बेशक तुम ने अच्छा किया, और जब येह कहते सुनो कि तुम ने बुरा किया तो बेशक तुम ने बुरा किया। (ابن ماجه،كتاب الزهد،باب الثناء الحسن،٤/٤٧٩،حديث:٤٢٢٣)

दीवार की मिट्टी (ह़िकायत)

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं एक मरतबा मैं ने किसी को ख़त़ लिखा और उस की सियाही पड़ोसी की दीवार की मिट्टी से ख़ुश्क करने लगा। मेरे दिल ने पड़ोसी की दीवार से मिट्टी लेना अच्छा न समझा लेकिन फिर मैं ने सोचा कि इस मा'मूली सी मिट्टी की क्या ह़ैसिय्यत और इस के लिये इजाज़त लेने की क्या ज़रूरत ? चुनान्चे, मैं ने मिट्टी ले कर सियाही को ख़ुश्क करना शुरूअ़ कर दिया जब मिट्टी ख़त़ पर डाली एक ग़ैबी आवाज़ ने मुझे चौंका दिया, वोह आवाज़ कुछ यूं थी :

سَيَعْلَمُ مَنِ اسْتَخَفَّ بِتُرَابِ مَا يَلْقٰى غَدًا مِنْ سُوْءِ الْحِسَابِ

तर्जमा : जो शख़्स मिट्टी को मा'मूली समझता है उसे अ़न क़रीब मा'लूम हो जाएगा कि उस का हि़साब कितना बुरा है !

(احیاء علوم الدین،کتاب النیة...الخ،بیان تفصیل الاعمال...الخ،٥/ ٩٩)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और नाराज़ पड़ोसी (हि़कायत)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "जन्नती मह़ल का सौदा" के सफ़ह़ा 33 पर लिखते हैं : येह उन दिनों की बात है जब मैं शहीद मस्जिद, खारादर, बाबुल मदीना कराची में इमामत की सआ़दत ह़ासिल करता था, और हफ़्ते के अक्सर दिन बाबुल मदीना के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों की मस्जिदों में जा कर सुन्नतों भरे बयानात कर कर के मुसलमानों को दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़ करवा रहा था और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों की एक ता'दाद मेरी दा'वत क़बूल कर चुकी थी और दा'वते इस्लामी उठान ले रही थी मगर अभी दा'वते इस्लामी एक कमज़ोर पौदे ही की मिस्ल थी। वाक़िआ़ यूं हुवा कि मूसा लैन, लियारी, बाबुल मदीना में जहां मेरी क़ियामगाह थी वहां का मेरा एक पड़ोसी किसी ना कर्दा ख़त़ा की बिना पर सिर्फ़ो सिर्फ़ ग़लत़ फ़ेहमी के सबब मुझ से सख़्त नाराज़ हो गया और बिफर कर मुझे ढूंडता हुवा शहीद मस्जिद पहुंचा। मैं वहां मौजूद न था बल्कि कहीं सुन्नतों भरा बयान करने गया हुवा था, लोगों के ब क़ौल उस शख़्स ने मस्जिद में नमाज़ियों के सामने मेरे बारे में सख़्त बर्हमी का इज़्हार किया और काफ़ी शोर मचाया और ए'लान किया कि मैं

इल्यास क़ादिरी के (कारनामों) का बोर्ड चढ़ाऊंगा वग़ैरा। मैं ने कोई इन्तिक़ामी कारवाई न की नीज़ हिम्मत भी न हारी और अपने मदनी कामों से ज़र्रा बराबर पीछे भी न हटा। ख़ुदा का करना ऐसा हुवा कि चन्द रोज़ के बा'द जब मैं अपने घर की त़रफ़ आ रहा था तो वोही शख़्स चन्द लोगों के हमराह मह़ल्ले में खड़ा था, मेरी कसोटी का वक़्त था, हिम्मत की और उस की त़रफ़ एक दम आगे बढ़ कर मैं ने कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ इस पर उस ने बा क़ाइदा मुंह फेर लिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं जज़्बात में न आया बल्कि मज़ीद आगे बढ़ कर मैं ने उस को बांहों में लिया और उस का नाम ले कर मह़ब्बत भरे लहजे में कहा : "बहुत नाराज़ हो गए हो !" मेरे येह कहते ही उस का ग़ुस्सा ख़त्म हो गया, बे साख़्ता उस की ज़बान से निकला : ना भई ना ! इल्यास भाई कोई नाराज़ी नहीं ! और फिर...फिर.. मेरा हाथ पकड़ कर बोला : चलो घर चलते हैं आप को मेरे साथ ठन्डी बोतल पीनी होगी।" और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अपने घर ले जा कर उस ने मेरी ख़ैर ख़्वाही की।

है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में
डूब सकती ही नहीं मौजों की तुग़्यानी में जिस की कश्ती हो मुह़म्मद की निगहबानी में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुराई को भलाई ख़त्म करती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह उसूल याद रखिये ! कि **नजासत को नजासत से नहीं पानी से पाक किया जाता है।** लिहाज़ा अगर कोई आप के साथ नादानी व शिद्दत भरा सुलूक करे तब भी आप उस के साथ नर्मी व मह़ब्बत भरा सुलूक करने की

कोशिश फ़रमाइये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस के मुस्बत नताइज देख कर आप का कलेजा ज़रूर ठन्डा होगा। हज़रते सय्यिदुना हकीम लुक़्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे से फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! जो शख़्स येह कहता है कि बुराई को बुराई दूर करती है वोह झूट बोलता है। अगर वोह सच्चा है तो दो आगें रौशन करे और देख ले कि क्या एक आग दूसरी को बुझाती है। बुराई को तो भलाई दूर करती है जैसे आग को पानी बुझाता है।

(المستطرف،الباب الثانی والثلاثون،١/٢٦٩)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(20) जिस ने तंगदस्ती के ख़ौफ़ से शादी न की वोह हम से नहीं

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : مَنْ تَرَكَ التَّزْوِيجَ مَخَافَةَ الْعَيْلَةِ فَلَيْسَ مِنَّا या'नी जिस ने तंगदस्ती के ख़ौफ़ से शादी न की वोह हम से नहीं।

(جامع الاحادیث،٧/١٦٥،حدیث:٢١٦٣٠)

रिज़्क़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिज़्क़ का वा'दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर लिया है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआला है :

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ اِلَّا عَلَی اللہِ رِزْقُهَا (پ١٢،ھود:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़* ***अल्लाह*** *के ज़िम्मए करम पर न हो।*

लिहाज़ा येह ज़ेह्न हरगिज़ मत बनाइये कि शादी करने से ख़र्च बढ़ेगा और तंगदस्ती का शिकार हो जाऊंगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया :

وَ اَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَ الصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَ اِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۲﴾ (پ۱۸،النور:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और निकाह़ कर दो अपनों में उन का जो बे निकाह़ हों और अपने लाइक़ बन्दों और कनीज़ों का अगर वोह फ़क़ीर हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल के सबब और अल्लाह वुस्अ़त वाला इल्म वाला है।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि कभी निकाह़ ग़ना (ख़ुशह़ाली) का सबब हो जाता है कि इस के सबब अल्लाह तआ़ला फ़क़ीर को ग़नी कर देता है, औ़रत ख़ुश नसीब होती है।

(नूरुल इरफ़ान, पारह 18, अन्नूर, ज़ेरे आयत : 32)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयत के तह़्त लिखते हैं : इस ग़ना (ख़ुशह़ाली) से मुराद या क़नाअ़त है कि वोह बेहतरीन ग़ना (ख़ुशह़ाली) है जो क़ानेअ़ (क़नाअ़त करने वाले) को तरद्दुद से बे नियाज़ कर देता है या किफ़ायत कि एक का खाना दो के लिये काफ़ी हो जाए जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा है या ज़ौज व ज़ौजा के दो रिज़्क़ों का जम्अ़ हो जाना या फ़राख़ी ब बरकते निकाह़। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 18, अन्नूर, ज़ेरे आयत : 32)

शादी “तंगदस्ती” को ख़त्म करती है

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक आदमी हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में तंगदस्ती की शिकायत ले कर हाज़िर हुवा तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे शादी करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। (درمنثور،پ۱۸،النور،تحت الآیۃ:۳۲،۱۸۹/۶)

निकाह करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ग़नी कर देगा

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** तआला ने तुम्हें निकाह का हुक्म दिया है उस की इताअत करो, **अल्लाह** तआला ने तुम्हारे साथ जो ग़ना (मालदारी) का वा'दा किया है **अल्लाह** तआला उसे पूरा करेगा। (کنز العمال،کتاب النکاح،قسم الافعال،۲۰۳/۸،جزء:۱۶،حدیث:۴۵۵۷۶)

तीन आदमियों की मदद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन आदमियों की मदद **अल्लाह** तआला के ज़िम्मए करम पर है। निकाह करने वाला जो पाक दामनी का इरादा रखता हो, मुकातब ग़ुलाम जो माल देने का इरादा रखता हो, और **अल्लाह** तआला की राह में जिहाद करने वाला।

(ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فی المجاھد۔الخ، ۲۴۷/۳، حدیث:۱۶۶۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(21) जो निकाह़ पर क़ुदरत रखता हो फिर भी न करे वोह हम से नहीं

ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : مَنْ قَدَرَعَلٰی اَنْ یَّنْکِحَ فَلَمْ یَنْکِحْ فَلَیْسَ مِنَّا या'नी जो निकाह़ पर क़ुदरत होने के बा वुजूद निकाह़ न करे वोह हम से नहीं ।

(دارمی،کتاب النکاح،باب الحث علی النکاح،۲/۱۷۷،حدیث:۲۱٦٤)

निकाह़ के फ़वाइद

निकाह़ के फ़वाइद बे शुमार हैं । इन में से नेक औलाद का होना, शहवत का ख़त्म होना, घर की देख भाल और क़बीले का बढ़ना भी है और उन के नानो नफ़्क़ा का बन्दोबस्त कर के उन के साथ रहने में मुजाहदे का सवाब ह़ासिल होता है, अगर बेटा (औलाद) नेक हो तो उस की दुआ़ से बरकत ह़ासिल होगी और अगर फ़ौत हो जाए तो (बरोज़े क़ियामत तेरा) शफ़ीअ़ होगा ।

(احیاء علوم الدین،کتاب آداب النکاح،فوائد النکاح،۲/۳۲ ملخصاً)

मेरा त़रीक़ा निकाह़ है

ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنِ اسْتَنَّ بِسُنَّتِیْ فَھُوَمِنِّیْ وَمِنْ سُنَّتِی النِّکَاحُ या'नी जिस ने मेरी सुन्नत को इख़्तियार किया वोह मुझ से है और मेरी सुन्नत में निकाह़ भी है ।

(مصنف عبدالرزاق،کتاب النکاح،باب وجوب النکاح وفضلہ،٦/۱۳۵،حدیث:۱۰٤۱۹)

निकाह़ करना कब सुन्नत है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर महर, नानो नफ़्क़ा देने और अज़्दवाजी हुक़ूक़ पूरे करने पर क़ादिर हो और शहवत का बहुत ज़ियादा ग़लबा न हो तो निकाह़ करना **सुन्नते मुअक्कदा** है। ऐसी हालत में **निकाह़** न करने पर अड़े रहना **गुनाह** है। अगर ह़राम से बचना...या...इत्तिबाए़ सुन्नत...या...औलाद का हुसूल पेशे नज़र हो तो **सवाब** भी पाएगा और अगर मह़ज़ हुसूले लज़्ज़त या क़ज़ाए शहवत मक़्सूद हो तो सवाब नहीं मिलेगा, **निकाह़** बहर ह़ाल हो जाएगा। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त 2/4)

निकाह़ करना फ़र्ज़ भी है और ह़राम भी !

निकाह़ कभी फ़र्ज़, कभी वाजिब, कभी मकरूह और बा'ज़ औक़ात तो ह़राम भी होता है। चुनान्चे अगर येह यक़ीन हो कि **निकाह़** न करने की सूरत में ज़िना में मुब्तला हो जाएगा तो निकाह़ करना **फ़र्ज़** है। ऐसी सूरत में **निकाह़** न करने पर **गुनाहगार** होगा। अगर महर व नफ़्क़ा देने पर क़ुदरत हो और ग़लबए शहवत के सबब ज़िना या बद निगाही या मुश्तज़नी में मुब्तला होने का अन्देशा हो तो इस सूरत में निकाह़ **वाजिब** है अगर नहीं करेगा तो **गुनाहगार** होगा। अगर येह अन्देशा हो कि निकाह़ करने की सूरत में नानो नफ़्क़ा या दीगर ज़रूरी बातों को पूरा न कर सकेगा तो अब **निकाह़** करना **मकरूह** है। अगर येह यक़ीन हो कि **निकाह़** करने की सूरत में नानो नफ़्क़ा या दीगर ज़रूरी बातों को पूरा न कर सकेगा तो अब **निकाह़** करना **ह़राम** और **जहन्नम में ले**

जाने वाला काम है (ऐसी सूरत में शहवत तोड़ने के लिये रोज़े रखने की तरकीब बनाए) (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, 2/4)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(22) जो भाईचारा क़ाइम न करे वोह हम से नहीं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : لَیْسَ مِنَّا مَنْ لَّمْ یُوَقِّرْ کَبِیْرَنَا وَیَرْحَمْ صَغِیْرَنَا وَیُؤَاخِیْ فِیْنَا وَیَزُوْر या'नी जो हमारे बड़ों की इ़ज़्ज़त, छोटों पर रह़म न करे, मुसलमानों के साथ भाईचारा और मुलाक़ात न करे वोह हम से नहीं ।

(المعجم الأوسط،٣/٣٤٩،حدیث:٤٨١٢)

इ़ज़्ज़त करो इ़ज़्ज़त पाओ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आज हम अपने से बड़ों की इ़ज़्ज़त नहीं करेंगे तो कल हमारा भी कोई एह़तिराम नहीं करेगा और अगर आज हम अपने बड़ों को इ़ज़्ज़त देंगे और उन का एह़तिराम करेंगे तो कल इस का फल हम देखेंगे । चुनान्चे,

बुज़ुर्गों का एह़तिराम करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो नौजवान किसी बुज़ुर्ग के सिन रसीदा होने की वज्ह से उस की इ़ज़्ज़त करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये किसी को मुक़र्रर कर देता है जो उस नौजवान के बुढ़ापे में उस की इ़ज़्ज़त करेगा । (ترمذی،کتاب البر والصلة،باب ماجاء فی اجلال الکبیر،٣/٤١١،حدیث:٢٠٢٩)

बुज़ुर्गों का अदब इन्सान को जन्नत में पहुंचा देता है

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अनस ! बड़ों का अदबो एहतिराम और छोटों पर शफ़्क़त करो, तुम जन्नत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे।

(شعب الايمان،باب فی رحم الصغير_الخ،٧/٤٥٨ حديث:١٠٩٨١)

तबर्रुक की क़द्र की बरकत

हज़रते अबू अ़ली रूज़बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की बहन फ़ातिमा बिन्ते अह़मद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : शहरे बग़दाद में कुछ नौजवानों ने अपने में से एक को किसी ज़रूरत से भेजा, उस ने लौटने में ताख़ीर कर दी, येह लोग ग़ज़बनाक होने लगे, इतने में वोह एक ख़रबूज़ा लिये हंसता हुवा आ पहुंचा। जवानों ने दरयाफ़्त किया : एक तो तू देर से आ रहा है, इस पर हंसता भी है ? लड़के ने कहा : मैं आप लोगों के लिये एक अ़जीब चीज़ लाया हूं। सब ने पूछा : वोह क्या ? लड़के ने अपने हाथ का ख़रबूज़ा उन्हें पेश किया और कहा : इस ख़रबूज़े पर हज़रते बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने हाथ रख दिया था, इस लिये मैं ने इसे बीस दिरहम में ख़रीद लिया। उस की बात सुन कर सब ने ख़रबूज़े को चूमा और अपनी अपनी आंखों से लगाया। उन में से एक ने कहा : हज़रते बिशर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को किस चीज़ ने इस मक़ाम पर पहुंचाया ? किसी ने कहा : तक़्वा ने। साइल ने कहा : मैं तुम्हें गवाह बना कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तौबा करता हूं,

इस के बा'द सब ने उसी की त़रह़ तौबा की, फिर वोह सब त़रत़ूस गए और वहीं शहादत का रुत्बा पा लिया। (روض الریاحین،ص۲۱۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

भाईचारा क्या है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی उख़ुव्वत व मह़ब्बत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : भाईचारा दो आदमियों के दरमियान एक राबित़ा होता है जैसे निकाह़ मियां-बीवी के दरमियान एक राबित़े का नाम है और जिस त़रह़ अ़क़्दे निकाह़ कुछ हुक़ूक़ का तक़ाज़ा करता है जिन को पूरा करना ह़क़्क़े निकाह़ क़ाइम रखने के लिये ज़रूरी है, अ़क़्दे उख़ुव्वत का भी येही ह़ाल है। तुम्हारे इस्लामी भाई का तुम्हारे माल और तुम्हारी ज़ात में ह़क़ है इसी त़रह़ ज़बान और दिल में भी कि तुम उस को मुआ़फ़ करो, उस के लिये दुआ़ करो, इख़्लास व वफ़ा से पेश आओ, उस पर आसानी बरतो और तक्लीफ़ व तकल्लुफ़ को छोड़ दो।

(احیاء علوم الدین،کتاب آداب الالفۃ۔۔۔الخ،الباب الثانی۔۔۔الخ،۲/۲۱٦)

मुसलमान से उख़ुव्वत (भाईचारा) और मुलाक़ात के फ़ज़ाइल

(1) नाम पूछ ले

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : जब एक शख़्स दूसरे शख़्स से भाईचारा करे तो उस का नाम

और उस के बाप का नाम पूछ ले और येह कि वोह किस क़बीले से है ? उस से महब्बत ज़ियादा मज़्बूत होगी ।

(ترمذی،کتاب الزھد،باب ماجاء فی إعلام الحب،٤/١٧٦،حدیث:٢٤٠٠)

(2) अल्लाह के लिये महब्बत करने का इन्आम

रहमते आलमिय्यान सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है कि मेरी महब्बत उन लोगों के लिये साबित हो गई जो मेरे लिये एक दूसरे से महब्बत करते, एक दूसरे पर ख़र्च करते और एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं । (مسند احمد،مسند الانصار،٨/٤٢١، حدیث: ٢٢٨٤٧)

(3) महशर की गर्मी और सायए अर्श

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन फ़रमाएगा, मेरे जलाल (बड़ाई) के लिये आपस में महब्बत करने वाले कहां हैं ? आज जब कि मेरे अर्श के साए के इलावा कोई साया नहीं मैं उन्हें अपने अर्श के साए में जगह दूंगा ।

(مسلم،کتاب البر والصلة،باب فی فضل الحب فی اللہ،ص١٣٨٨، حدیث: ٢٥٦٦)

जिस से महब्बत करो उसे बता दो (हिकायत)

एक शख़्स ने सरकारे आली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अर्ज़ की : मैं फ़ुलां शख़्स से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वासिते महब्बत रखता हूं । इरशाद फ़रमाया :

तुम ने उस को इत्तिलाअ़ दी ? अ़र्ज़ की : नहीं, इरशाद फ़रमाया : उठो ! उस को इत्तिलाअ़ दो । उस ने जा कर उसे बताया, उस ने कहा : जिस के लिये तू मुझ से मह़ब्बत रखता है, वोह तुझे मह़बूब बना ले । इस के बा'द वोह वापस आ गए । नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : उस ने क्या कहा ? जो उस ने कहा था कह सुनाया तो रह़मते कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तू उस के साथ होगा जिस से तू ने मह़ब्बत की और तेरे लिये वोह है जो तूने क़स्द (या'नी इरादा) किया है ।

(شعب الایمان، فصل فی المصافحۃ والمعانقۃ، ٦/٤٨٩، حدیث:٩٠١١)

(4) गुनाह झड़ते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दूसरे से मह़ब्बत करने वाले जब बाहम मुलाक़ात करते वक़्त ख़ुश होते हैं तो उन के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जैसे मौसिमे ख़ज़ां में दरख़्तों के पत्ते ख़ुश्क हो कर गिरते हैं ।

(احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفۃ۔۔۔الخ، بیان معنی الاخوۃ۔۔۔الخ، ٢/٢٠١)

(5) मुसलमान को मह़ब्बत से देखना भी सवाब है

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : किसी आदमी का अपने मुसलमान भाई की त़रफ़ मुवद्दत व रह़मत (मह़ब्बत व उल्फ़त) के साथ देखना इ़बादत है ।

(احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفۃ۔۔۔الخ، بیان معنی الاخوۃ۔۔۔الخ، ٢/٢٠١)

भाईचारा किस से किया जाए ?

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने फ़रमाया : फ़ाजिर से भाईबन्दी न कर कि वोह अपने फे़'ल को तेरे लिये मुज़य्यन करेगा (या'नी संवारेगा) और येह चाहेगा कि तू भी उस जैसा हो जाए और अपनी बद तरीन ख़स्लत को अच्छा कर के दिखाएगा, तेरे पास उस का आना जाना ऐ़ब और शर्म का बाइ़स है और बे वुक़ूफ़ से भी भाईचारा न कर कि वोह ख़ुद को मशक़्क़त में डाल देगा और तुझे कुछ नफ़्अ़ नहीं पहुंचाएगा और कभी तुझे नफ़्अ़ पहुंचाना चाहे भी तो नुक़्सान पहुंचा देगा, उस की ख़ामोशी बोलने से बेहतर है उस की दूरी नज़दीकी से बेहतर है और मौत ज़िन्दगी से बेहतर और झूटे से भी भाईचारा न कर कि उस के साथ मुआ़शरत तुझे नफ़्अ़ न देगी, तेरी बात दूसरों तक पहुंचाएगा और दूसरों की तेरे पास लाएगा और अगर तू सच बोलेगा फिर भी वोह सच नहीं बोलेगा । (تاریخ دمشق،۴۲/۵۱۶)

भाईचारे की सच्चाई की अ़लामत

हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : भाईचारे की सच्चाई में से येह भी है कि बन्दा अपने भाई की इ़ज़्ज़त फ़क़्र (मोहताजी) की ह़ालत में उस से कहीं ज़ियादा करे जितनी इ़ज़्ज़त उस की ग़िना (अमीरी) की ह़ालत में करता था क्यूंकि फ़क़्र ग़िना से अफ़्ज़ल है और उस का भाई अपने फ़क़्र के सबब नहीं बल्कि अपने मक़ामो मर्तबे की वज्ह से ज़ियादा इ़ज़्ज़त का मुस्तह़िक़ है । (تنبیہ المغترین،ص۲۱۰)

हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الاَكْرَم फ़रमाते हैं : जब तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी से भाईचारा क़ाइम करे तो उस से दुन्यादारों जैसा मुआमला न कर और बिग़ैर बदले की ख़्वाहिश के ब कसरत उस की मदद कर ताकि तुम्हारे भाईचारे को दवाम मिले। (تنبیہ المغترین،ص۲۰۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(23) नमाज़ में कव्वे की तरह ठोंगें मारने वाला हम से नहीं

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ठोंगें मारने से मन्अ किया और इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ مِنَّا مَنْ يَنْقُرُ نَقْرَ الْغُرَابِ या'नी जो कव्वे की तरह ठोंगें मारे वोह हम से नहीं। (جامع الاصول للجزری،مقدار الرکوع والسجود،۵/۳۸۲،حدیث:۳۴۹۷)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन शिब्ल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कव्वे की तरह ठोंगें मारने, जानवरों की तरह बाज़ू बिछाने और आदमी को मस्जिद में अपनी जगह मुक़र्रर कर लेने से मन्अ फ़रमाया है जैसे ऊंट अपनी जगह मुक़र्रर कर लेता है।

(ابو داؤد، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ من لا یقیم ...الخ، ۱/۳۲۸، حدیث: ۸۶۲)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी साजिद (सजदा करने वाला) सजदा ऐसी जल्दी जल्दी न करे जैसे कव्वा ज़मीन पर चोंच मार कर फ़ौरन उठा लेता है। (मिरआतुल मनाजीह, 2/87)

नमाज़ में ता'दीले अरकान वाजिब हैं

नमाज़ में ता'दीले अरकान या'नी रुकूअ़ व सुजूद व क़ौमा (या'नी रुकूअ़ से सीधा खड़ा होना) व जल्सा (या'नी दो सजदों के दरमियान सीधा बैठना) में कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की क़दर (मिक़्दार) ठहरना (वाजिब है)। (बहारे शरीअ़त, 1/518) नमाज़ी को चाहिये कि अपनी नमाज़ में फ़राइज़, वाजिबात, सुनन और मुस्तह़ब्बात का लिह़ाज़ रखे और आ़जिज़ी व इन्किसारी और खुशूअ़ व खुज़ूअ़ की कैफ़िय्यत पैदा करे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(24) ह़ासिद और चुग़लख़ोर हम से नहीं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे इ़ब्रत निशान है : ह़सद करने वाले, चुग़ली खाने वाले और काहिन के पास जाने वाले का मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और न ही मेरा उस से कोई तअ़ल्लुक़ है।

(مجمع الزوائد، كتاب الادب، باب ما جاء في الغيبة و النميمة، ١٧٢/٨، حديث: ١٣١٢٦)

ह़सद की ता'रीफ़

किसी की दीनी या दुन्यावी ने'मत के ज़वाल (या'नी उस से छिन जाने) की तमन्ना करना या येह ख़्वाहिश करना कि फ़ुलां शख़्स को येह येह ने'मत न मिले, इस का नाम "ह़सद" है। (الحديقة الندية، ١/٦٠٠) ह़सद करने वाले को "**ह़ासिद**" और जिस से ह़सद किया जाए उसे "**मह़सूद**" कहते हैं।

हसद की हक़ीक़त

हसद की हक़ीक़त येह है कि जब किसी (मुसलमान) भाई को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत मिलती है तो हासिद इन्सान इसे ना पसन्द करता है और उस भाई से ने'मत का ज़वाल चाहता है। अगर वोह अपने भाई को मिलने वाली ने'मत को ना पसन्द नहीं करता और न उस का ज़वाल चाहता है बल्कि वोह चाहता है कि उसे भी ऐसी ही ने'मत मिल जाए तो इसे रश्क कहते हैं।

(احیاء علوم الدین،کتاب ذم الغضب...الخ،بیان حقیقۃ الحسد...الخ،۳/ ۲۳٤)

हसद ईमान को बिगाड़ता है

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हसद ईमान को ऐसा बिगाड़ता है जैसे ऐलवा (एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शहद को बिगाड़ता है।

(الجامع الصغیر،حدیث:۳۸۱۹،ص۲۳۲)

इब्लीस व फ़िरऔन से बढ़ कर शरीर कौन ?

मरवी है कि एक मरतबा इब्लीस ने फ़िरऔन के दरवाज़े पर आ कर दस्तक दी। फ़िरऔन ने पूछा : कौन है ? इब्लीस ने कहा : अगर तू खुदा होता तो मुझ से बे ख़बर न होता, जब अन्दर दाख़िल हुवा तो फ़िरऔन ने कहा : क्या तू ज़मीन में उसे जानता है जो तुझ से और मुझ से बढ़ कर शरीर है ? कहने लगा : हां ! हसद करने वाला, और मैं हसद की वज्ह से ही इस मशक़्क़त में हूं।

(تفسیر کبیر،۱/۲۲٦)

सब से पहला गुनाह

हज़रते सय्यिदुना जुनादा बिन अबू उमैता رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़सद वोह पहला गुनाह है जिस के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की गई, इब्लीस मलऊ़न ने हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सजदा करने के मुआ़मले में उन से ह़सद किया, पस इसी ह़सद ने इब्लीस को ना फ़रमानी पर उभारा।

(درمنثور،پ١،البقرة،تحت الآية:٣٤،١/١٢٥)

सायए अ़र्श में किस को देखा ?

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक शख़्स को अ़र्श के साए में देखा तो उस के मक़ामो मर्तबे पर उन्हें बहुत रश्क आया और फ़रमाने लगे यक़ीनन येह शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां बुज़ुर्गी वाला है। पस आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस का नाम जानने के लिये अ़र्ज़ की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : बल्कि मैं तुम्हें उस का अ़मल बताता हूं (जिस के सबब उसे येह मक़ाम मिला) मैं ने अपने बन्दों को अपने फ़ज़्ल से जो ने'मतें अ़ता फ़रमाई हैं येह शख़्स उन पर ह़सद नहीं करता था, चुग़ली नहीं खाता था और अपने वालिदैन की ना फ़रमानी नहीं करता था।

(حلية الاولياء،عمرو بن ميمون،٤/١٦٣،حديث:٥١٢١)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चुग़ली क्या है ?

हज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى ने "बुख़ारी शरीफ़" की शर्ह़ में नक़्ल फ़रमाया कि "किसी की बात को दूसरे आदमी तक पहुंचाने और फ़साद फैलाने के लिये बयान करना चुग़ली है।"

(عمدة القارى، كتاب الوضوء، باب من الكبائر ... الخ، ٥٩٤/٢، تحت الحديث:٢١٦)

चुग़ली का अ़ज़ाब

ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : झूट से मुंह काला होता और चुग़ली से क़ब्र का अ़ज़ाब होता है।

(شعب الايمان، باب فى حفظ اللسان، ٢٠٨/٤، حديث:٤٨١٣)

चुग़ल ख़ोरी का वबाल

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि एक दफ़्आ़ हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में सख़्त क़ह़्त़ पड़ गया। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बनी इस्राईल की हमराही में बारिश के लिये दुआ़ मांगने चले लेकिन बारिश न हुई आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तीन दिन तक येही मा'मूल रखा लेकिन बारिश फिर भी न हुई। फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला की त़रफ़ से वह़्य नाज़िल हुई कि ऐ मूसा ! मैं तुम्हारी और तुम्हारे साथ वालों की दुआ़ क़बूल नहीं करूंगा क्यूंकि

उन में एक चुग़ल ख़ोर है । ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने अ़र्ज़ की : ''ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! वोह कौन है ताकि हम उसे यहां से निकाल दें ।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जवाब मिला : ''ऐ मूसा ! मैं तो बन्दों को इस से रोकता हूं ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने बनी इस्राईल को हुक्म फ़रमाया कि तुम सब बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में चुग़ली से तौबा करो । जब सब ने तौबा की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बारिश अ़त़ा फ़रमा दी ।

(احیاء علوم الدین،کتاب الاذکار والدعوات،الباب الثانی،۱/۴۰۷)

मह़ब्बत के चोर से बचिये !

किसी दाना का क़ौल है : चुग़ल ख़ोरी दिलों में दुश्मनी पैदा करती है और जिस ने तुम्हारी चुग़ली की बेशक उस ने तुम्हें गाली दी और जो तुम्हारे सामने किसी की चुग़ली करता है वोह तुम्हारी भी चुग़ली करता होगा चुग़ल ख़ोर जिस के सामने चुग़ली करता है उस के लिये झूट बोलता है और जिस की चुग़ली करता है उस से बद दियानती करता है । शे'र

اِحْفَظْ لِسَانَکَ لَاتُؤْذِیْ بِہٖ اَحَدًا   مَنْ قَالَ فِی النَّاسِ عَیْبًا قِیْلَ فِیْہِ بِمِثْلِہٖ

तर्जमा : अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त कर, इस के ज़रीए किसी को भी तक्लीफ़ न दे, कि जो शख़्स लोगों पर ऐ़ब लगाता है, उस पर भी ऐ़ब लगाए जाते हैं । (بحر الدموع،تحریم الغیبۃ والنمیمۃ،ص ۱۸۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(25) रेशम के लिबास और चांदी के बरतनों का इस्ति'माल

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : مَنْ لَبِسَ الْحَرِيْرَ وَشَرِبَ فِي الْفِضَّةِ فَلَيْسَ مِنَّا या'नी जो रेशम पहने और चांदी के बरतनों में पिये वोह हम से नहीं ।

(المعجم الاوسط،۳/۳۵۷،حديث:۴۸۳۷)

दुन्या में रेशम पहनने वाला आख़िरत में मह़रूम रहेगा

हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ्लाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो दुन्या में रेशम पहनेगा, वोह आख़िरत में नहीं पहनेगा ।

(بخاری،کتاب اللباس، باب لبس الحرير...إلخ،۴/۵۹،حديث:۵۸۳۴)

जन्नतियों का लिबास

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जो मुसलमान नाजाइज़ रेशम पहने वोह अव्वलन ही जन्नत में न जा सकेगा क्यूंकि रेशम का लिबास हर जन्नती को मिलेगा वहां पहुंच कर, रब तआ़ला फ़रमाता है : وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿۲۳﴾ (پ۱۷،الحج:۲۳) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वहां उन की पोशाक रेशम है ।) बा'ज़ सूरतों में और बा'ज़ रेशम मर्द को ह़लाल हैं उन के पहनने पर सज़ा नहीं । ख़याल रहे कि कीड़े का रेशम मर्द को ह़राम है, दरयाई रेशम या सन से बना हुवा नक़्ली रेशम ह़लाल है कि वोह रेशम नहीं । (मिरआतुल मनाजीह़, 6/95)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : जिस कपड़े का ताना (सूत के तागे जो कपड़ा बुनने में लम्बाई की त़रफ़ हों), बाना (सूत के तागे जो कपड़ा बुनने में चौड़ाई की त़रफ़ हों,) या सिर्फ़ बाना रेशम का हो वोह मर्द को पहनना ह़राम है औ़रत को ह़लाल और जिस का ताना रेशम का हो बाना सूत का या ऊन का उस का पहनना मर्द को भी ह़लाल है। रेशम से मुराद कीड़े का रेशम है, दरयाई रेशम या सन का रेशम सब को ह़लाल है कि वोह ह़रीर व दीबाज नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/74)

तुम्हारे लिये आख़िरत में हैं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ह़रीर और दीबाज न पहनो और न सोने और चांदी के बरतन में पानी पियो और न उन के बरतनों में खाना खाओ कि येह चीज़ें दुन्या में काफ़िरों के लिये हैं और तुम्हारे लिये आख़िरत में हैं। (بخاری،کتاب الاطعمه،باب الاکل فی اناء مفضّض،۳/۵۳۵،حدیث:۵۴۲۶)

चांदी का बरतन फेंक दिया !

ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को चांदी के बरतन में पानी पेश किया गया, उन्हों ने उस को उठा कर फेंक दिया और फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रेशम, दीबाज, सोने और चांदी के बरतनों को इस्ति'माल करने से मन्अ़ फ़रमाया है।

(ابوداود،کتاب الاشربة،باب فی الشرب فی آنیة الذهب والفضة،۳/۴۷۳،حدیث:۳۷۲۳)

“ग़ौस” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सोने और चांदी के बरतनों के तीन अहम मसाइल

(1) सोने चांदी के बरतन में खाना पीना और इन की प्यालियों से तेल लगाना या इन के इत्रदान से इत्र लगाना या इन की अंगेठी से बख़ूर करना (या'नी धूनी लेना) मन्अ़ है और येह मुमानअ़त मर्द व औ़रत दोनों के लिये है। औ़रतों को इन के ज़ेवर पहनने की इजाज़त है। ज़ेवर के सिवा दूसरी त़रह़ सोने चांदी का इस्ति'माल मर्द व औ़रत दोनों के लिये नाजाइज़ है।

(2) सोने चांदी के चमचे से खाना, इन की सलाई या सुर्मादानी से सुर्मा लगाना, इन के आईने में मुंह देखना, इन की क़लम दवात से लिखना, इन के लोटे या त़श्त से वुज़ू करना या इन की कुरसी पर बैठना मर्द औ़रत दोनों के लिये ममनूअ़ है।

(3) सोने चांदी की आरसी (एक ज़ेवर जो औ़रतें हाथ के अंगूठे में पहनती हैं, उस में शीशा जड़ा होता है) पहनना औ़रत के लिये जाइज़ है, मगर उस आरसी में मुंह देखना औ़रत के लिये भी नाजाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, 3/395)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(26) जो मुसलमान का ह़क़ न जाने वोह हम से नहीं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : لَیْسَ مِنَّا مَنْ لَّمْ یَرْحَمْ صَغِیْرَنَا وَیُوَقِّرْ کَبِیْرَنَا وَیَعْرِفْ لَنَا حَقَّنَا या'नी जो हमारे

छोटों पर रहम न करे, हमारे बड़ों की इ़ज़्ज़त न करे और मुसलमान का ह़क़ न जाने वोह हम से नहीं।

(المعجم الکبیر، ۱۱/۳۵۵، حدیث:۱۲۲۷٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन मुसलमान के हु़क़ूक़ निहायत अहम हैं, मुसलमानों से हमारे कई त़रह़ के तअ़ल्लुक़ात होते हैं मसलन बाप, बेटा, भाई, मामूं, चचा, पड़ोसी, मुलाज़िम वग़ैरहा। हर एक के ए'तिबार से हमें उन के हु़क़ूक़ को अदा करना है, जहां शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने मुसलमानों की इ़ज़्ज़तो अ़ज़्मत और मक़ामो मर्तबा बयान किया है वहीं उन के हु़क़ूक़ की अदाएगी का हुक्म दिया और कुछ हु़क़ूक़ गिनवाए हैं। चुनान्चे,

मुसलमानों के छे हु़क़ूक़

ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमान के मुसलमान पर छे हु़क़ूक़ हैं (1) जब वोह बीमार हो तो इ़यादत करे (2) जब वोह मर जाए तो उस के जनाज़े पर ह़ाज़िर हो (3) जब दा'वत करे तो उस की दा'वत क़बूल करे (4) जब वोह मुलाक़ात करे तो उस को सलाम करे (5) जब वोह छींके तो जवाब दे।[1] (6) उस की ग़ैर ह़ाज़िरी और मौजूदगी दोनों सूरतों में उस की ख़ैर ख़्वाही करे।

(ترمذی،کتاب الأدب،باب ما جاء فی تشمیت العاطس، ٤/٣٣٨،حدیث: ٢٧٤٦)

---

1 : छींक का जवाब जब दिया जाए जब कि वोह छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे, तो सुनने वाला कहे : یَرْحَمُکَ اللّٰہ फिर छींकने वाला कहे : یَھْدِیْکُمُ اللّٰہُ وَیُصْلِحُ بَالَکُمْ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/315)

(27) मैं दुन्या से और दुन्या मुझ से नहीं

रसूले नज़ीर, सीराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَسْتُ مِنَ الدُّنْيَا وَلَيْسَتْ مِنِّي या'नी मैं दुन्या से और दुन्या मुझ से नहीं। (فردوس الاخبار،٢/٢١٤، حديث:٥٣٢٢)

दुन्या ला'नती चीज़ है

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : होशयार रहो दुन्या ला'नती चीज़ है और जो दुन्या में है वोह ला'नती है सिवाए **अल्लाह** तआला के ज़िक्र के और उस के जो रब के क़रीब कर दे और आलिम के और तालिबे इल्म के। (ترمذی،کتاب الزھد،باب ما جاء فی ھوان الدنیا علی اللہ،٤/١٤٤، حدیث: ٢٣٢٩)

दुन्या क्या है ?

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان हदीसे पाक के इस हिस्से "जो दुन्या में है वोह ला'नती है" के तहत फ़रमाते हैं : जो चीज़ **अल्लाह** व रसूल से ग़ाफ़िल कर दे वोह दुन्या है या जो **अल्लाह** व रसूल की नाराज़ी का सबब हो वोह दुन्या है, बाल बच्चों की परवरिश, ग़िज़ा लिबास, घर वग़ैरा हासिल करना सुन्नते अम्बियाए किराम है येह दुन्या नहीं। इस मा'ना (या'नी जो **अल्लाह** व रसूल से ग़ाफ़िल कर दे) से वाक़ेई दुन्या और दुन्या वाली चीज़ें ला'नती हैं। (हदीसे पाक के इस हिस्से "सिवाए **अल्लाह** तआला के ज़िक्र के" के तहत फ़रमाते हैं :) येह चीज़ें दुन्या नहीं हैं। **अल्लाह** के ज़िक्र से मुराद सारी इबादात हैं। والاً बना है वली से ब मा'ना क़ुर्ब या महब्बत या ताबेअ़ होना या सबब लिहाज़ा इस जुम्ले के चार

मा'ना हैं : वोह ह़ज़राते अम्बिया व औलिया जो **अल्लाह** से क़रीब कर दें या **अल्लाह** तआ़ला उन से मह़ब्बत करता है, या जो ज़िक्रे इलाही से क़रीब कर दे, या जो ज़िक्रुल्लाह के ताबेअ़ है, या जो ज़िक्रुल्लाह का सबब है। (अशिअ़्आ़) या'नी **अल्लाह** का ज़िक्र **अल्लाह** के मह़बूब बन्दे उ़लमा त़लबा अगर्चे दुन्या में हैं मगर दुन्या नहीं हैं येह तो **अल्लाह** के मह़बूब हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** का ज़िक्र हर इ़बादत हर सआ़दत का सर है जैसे बदन के लिये जान ज़रूरी है ऐसे ही मोमिन के लिये ज़िक्रुल्लाह लाज़िमी है। ज़िक्रुल्लाह से दुन्या का बक़ा आस्मानो ज़मीन का क़ियाम है। (मिर्क़ात) जब ज़ाकिरीन फ़ना हो जाएंगे तो क़ियामत आ जाएगी। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/17)

दुन्या की मज़म्मत (ह़िकायत)

एक मरतबा रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र एक मुर्दा बकरी के पास से हुवा तो आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया (या'नी पूछा) क्या तुम्हें मा'लूम है कि येह बकरी अपने मालिक के नज़्दीक किस क़दर ह़क़ीर है? फिर आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है! जिस क़दर येह बकरी अपने मालिक के नज़्दीक ह़क़ीर है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक दुन्या इस से भी ज़ियादा ह़क़ीर व ज़लील है, अगर दुन्या की क़द्रो क़ीमत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो काफ़िर को इस से कभी एक क़त़रा भी न पिलाता। (ابن ماجة،كتاب الزهد،باب مثل الدنيا،٤/٤٢٧،حديث:٤١١٠)

मेरी और दुन्या की महब्बत एक दिल में जम्अ़ नहीं हो सकतीं

शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) की त़रफ़ वह़्य भेजी कि ऐ दावूद ! गुनहगारों को येह खुश ख़बरी सुना दो कि कोई गुनाह मेरी बख़्शिश से बड़ा नहीं और सिद्दीक़ीन को इस बात का डर सुनाओ कि वोह अपने नेक आ'माल पर खुश न हों कि मैं ने जिस से भी अपनी ने'मतों का ह़िसाब लिया वोह तबाहो बरबाद हो जाएगा, ऐ दावूद ! अगर तू मुझ से महब्बत करना चाहता है तो दुन्या की महब्बत को अपने दिल से निकाल दे क्यूंकि मेरी और दुन्या की महब्बत एक दिल में जम्अ़ नहीं हो सकतीं। ऐ दावूद ! जो मुझ से महब्बत करता है वोह रात को तहज्जुद अदा करता है जब कि लोग सो रहे होते हैं, वोह तन्हाई में मुझे याद करता है जब ग़ाफ़िल लोग मेरे ज़िक्र से ग़फ़्लत में पड़े होते हैं, वोह मेरी ने'मत पर शुक्र अदा करता है जब कि भूलने वाले मुझ से ग़फ़्लत इख़्तियार करते हैं।

(حلیۃ الاولیاء، ۸/۲۱۱، حدیث:۱۱۹۰۶ الی قولہ(الا ھلك)، بحر الدموع، ص ۲۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(28) घरवालों के ख़र्च में बुख़्ल करने वाला हम से नहीं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : لَيْسَ مِنَّا مَنْ وَسَّعَ اللّٰهُ عَلَيْهِ ثُمَّ قَتَّرَ عَلٰى عِيَالِهٖ या'नी जिसे

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने खुशहाली अता फ़रमाई इस के बा वुजूद वोह अपने बाल बच्चों पर ख़र्च करने में बुख़्ल करे वोह हम से नहीं। (فردوس الاخبار، ۲/۲۱٤،حديث:۵۳۱۱)

अपने घरवालों की ख़ैर ख़्वाही कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अपने घरवालों की ख़ूब ख़ैर ख़्वाही कीजिये, (इसराफ़ से बचते हुवे) ख़ूराक, लिबास और रिहाइश वग़ैरहा का उ़म्दा एहतिमाम कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस पर भी आप को सवाब मिलेगा और आख़िरत में जहां लोग एक एक नेकी को तरसेंगे वहां अपने घरवालों पर ख़र्च करने वाले खुश नसीब मुसलमान की इस नेकी को सब से पहले उस के मीज़ान में रखा जाएगा, चुनान्चे,

मीज़ान में सब से पहले किस अ़मल को रखा जाएगा

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बन्दे के मीज़ान में सब से पहले उस के अपने घरवालों पर ख़र्च किये गए माल को रखा जाएगा। (المعجم الاوسط،٤/۳۲۸،حديث:٦١۳۵)

अहलिया को पानी पिलाने पर सवाब (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जब कोई शख़्स अपनी बीवी को पानी पिलाता है तो उसे इस का अज्र दिया जाता है। रावी कहते हैं कि फिर मैं

अपनी बीवी के पास आया और मैं ने उसे पानी पिलाया और जो कुछ मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना था उसे सुनाया।

(مجمع الزوائد،کتاب الزکاۃ،باب فی نفقۃ الرجل ...الخ،۳/۳۰۰،حدیث:٤٦٥٩)

चादर का सदक़ा (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान या अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ऊनी चादर को ख़रीदने के लिये भाव तै कर रहे थे कि मेरा वहां से गुज़र हुवा और मैं ने वोह चादर ख़रीद कर अपनी बीवी सुख़ैला बिन्ते उ़बैदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) को ओढ़ा दी। जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ या अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वहां से गुज़र हुवा तो उन्हों ने पूछा कि तुम ने जो चादर ख़रीदी थी उस का क्या हुवा ? मैं ने कहा : उसे मैं ने सुख़ैला बिन्ते उ़बैदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) पर सदक़ा कर दिया है। तो उन्हों ने पूछा : जो कुछ तुम अपने घरवालों पर ख़र्च करते हो क्या वोह सदक़ा है ? मैं ने जवाब दिया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ फ़रमाते हुवे सुना है। जब मेरी येह बात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने ज़िक्र की गई तो फ़रमाया : अ़म्र ने सच कहा है तुम जो कुछ अपने घरवालों पर ख़र्च करते हो वोह उन पर सदक़ा ही है।

(الترغیب والترھیب، کتاب النکاح،الترغیب فی النفقۃ...الخ، ۳/۴۳، حدیث: ۱۵)

घरवालों के लिये रिज़्क़े हलाल की तलाश का सवाब (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक शख़्स नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने से गुज़रा। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने उस की चुस्ती देख कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काश ! येह शख़्स राहे ख़ुदा में होता ! तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर येह अपने छोटे बच्चों की ज़रूरत पूरी करने के लिये निकला है तो भी येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है और अगर अपने बूढ़े वालिदैन की ख़िदमत के लिये निकला है तो भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है और अगर अपने आप को बचाने के लिये निकला है तो भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है और अगर येह रियाकारी और तफ़ाख़ुर के लिये निकला है तो फिर येह शैत़ान की राह में है। (المعجم الکبیر، ١٩/١٢٩،حدیث:٢٨٢)

माहे रमज़ान में अहलो इ़याल पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : जब माहे रमज़ान की पहली रात आती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते : रमज़ानुल मुबारक के पूरे महीने को मरह़बा ! इस के दिन में रोज़े हैं और रातों में क़ियाम और इस में बीवी-बच्चों पर ख़र्च करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करने की त़रह़ है।

(الروض الفائق،المجلس الخامس،ص٤٠)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(29) अपने आप को ज़िल्लत पर पेश करने वाला हम से नहीं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे इब्रत निशान है : مَنْ اَعْطَى الذِّلَّ مِنْ نَفْسِهٖ طَائِعًا غَيْرَ مُكْرَهٍ فَلَيْسَ مِنَّا या'नी जो शख़्स बिला इकराह (या'नी मजबूर किये बिग़ैर) अपने आप को ज़िल्लत पर पेश करे वोह हम से नहीं। (المعجم الاوسط،١/١٤٧،حديث:٤٧١)

मुसलमान अपने आप को ज़िल्लत पर कैसे पेश कर सकता है !

हुज़ूर रह़मते कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे इ़ज़्ज़त निशान है : मोमिन को लाइक़ नहीं कि वोह अपने आप को ज़िल्लत पर पेश करे। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुसलमान अपने आप को कैसे ज़िल्लत पर पेश कर सकता है ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपने आप को ऐसी आज़माइश पर पेश करना जिस को आदमी बरदाश्त न कर सके।

(ترمذی،کتاب الفتن،باب ماجاء فی النهی عن سب الرياح،٤/١١٢،حديث:٢٢٦١)

दुआए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहा करते थे : اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَالْقِلَّةِ وَالذِّلَّةِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ या'नी

इलाही मैं तेरी पनाह मांगता हूं फ़क़ीरी, कमी और ज़िल्लत से और इस बात से तेरी पनाह मांगता हूं कि मैं किसी को सताऊं या सताया जाऊं । (ابوداؤد،کتاب الوتر،باب فی الاستعاذۃ،۲/۱۳۰،حدیث:۱۵۴۴)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : **ज़िल्लत से मुराद लोगों की निगाह में हक़ारत है या मालदारों के सामने आजिज़ी ।**

(मिरआतुल मनाजीह, 4/61)

मुतकब्बिर के साथ तकब्बुर भी तवाज़ोअ़ है

हज़रते सय्यिदुना अबू नस्र बिशर बिन हारिस (अल मा'रूफ़ बिशर हाफ़ी) رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमान है : मुतकब्बिर के साथ तकब्बुर से पेश आना भी तवाज़ोअ़ की एक क़िस्म है ।

(المستطرف،الباب الثلاثون،۱/۲۰۱)

जिस अम्र में मुसलमानों को ज़िल्लत पहुंचे उस का तर्क वाजिब है

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया : जिस मुबाह के तर्क (छोड़ने) में मुसलमानों के लिये ज़िल्लत हो वोह वाजिब हो जाता है कि मुसलमानों को ज़िल्लत पहुंचाना हराम तो जिस अम्र (काम) में मुसलमानों को ज़िल्लत पहुंचे उस का तर्क (या'नी छोड़ना) वाजिब है । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, 451)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(30) तीन ख़स्लतें जिस में न हों वोह हम से नहीं

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

ثَلَاثٌ مَنْ لَّمْ يَكُنْ فِيْهِ فَلَيْسَ مِنِّيْ وَلَا مِنَ اللهِ قِيْلَ وَمَا هُنَّ قَالَ حِلْمٌ يُرَدُّ بِهٖ جَهْلُ الْجَاهِلِ أَوْحُسْنُ خُلُقٍ يَعِيْشُ بِهٖ فِي النَّاسِ أَوْوَرَعٌ يَحْجِزُهٗ عَنْ مَعَاصِي اللهِ

या'नी जिस आदमी में तीन ख़स्लतें न हों वोह मुझ से नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ऐसे आदमी से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं, अ़र्ज़ की गई : वोह क्या ख़स्लतें हैं ? इरशाद फ़रमाया : (1) ऐसा ह़िल्म जिस के ज़रीए जाहिल की जहालत को दूर किया जाए (2) हुस्ने अख़्लाक़ जिस के ज़रीए लोगों में अच्छे त़रीक़े से ज़िन्दगी बसर की जाए (3) ऐसा तक़्वा जो आदमी को गुनाहों से बचाए। (المعجم الأوسط،٣/ ٣٦٢،حديث:٤٨٤٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा ह़िल्म (बुर्दबारी), तक़्वा और हुस्ने अख़्लाक़ **अल्लाह** तबारक व तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्दीदा आ़दतें हैं, हमें इन के हुसूल की कोशिश करनी चाहिये, हमारे मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें इस की दुआ़ मांगना भी सिखाई है चुनान्चे,

दुआ़ए रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूले मक़्बूल, बीबी आमिना के महकते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ करते हुवे अ़र्ज़ की : اَللّٰهُمَّ اَغْنِنِيْ بِالْعِلْمِ وَزَيِّنِّيْ بِالْحِلْمِ وَاَكْرِمْنِيْ بِالتَّقْوٰى وَجَمِّلْنِيْ بِالْعَافِيَةِ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इ़ल्म के साथ ग़ना, बुर्दबारी के साथ ज़ीनत, तक़्वा के साथ इ़ज़्ज़त और आ़फ़िय्यत के साथ ज़ीनत अ़ता फ़रमा । (كنز العمال،كتاب الاذكار، قسم الاقوال،١/٨١،جزء:٢،حديث:٣٦٦٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इमामा बांधो तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा

ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : इमामा बांधो तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा । (المستدرك،كتاب اللباس،باب اعتموا تزدادوا حلماً،٥/٢٧٢،حديث:٧٤٨٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीज़ान में ह़ुस्ने अख़्लाक़ से ज़ियादा वज़्नी कोई शै नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मोमिन के मीज़ान में ह़ुस्ने अख़्लाक़ से ज़ियादा वज़्नी कोई शै नहीं होगी ।

(ترمذی، كتاب البر والصلة،باب ماجاء فی حسن الخلق،٣/ ٤٠٣، حديث:٢٠٠٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अच्छे अख़्लाक़ गुनाह को पिघला देते हैं

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अच्छे अख़्लाक़ गुनाह को इस त़रह़ पिघला देते हैं जिस

तरह पानी बर्फ़ को पिघला देता है और बुरे अख़्लाक़ अ़मल को ऐसे ख़राब करते हैं जैसे सिर्का शहद को ख़राब कर देता है।

(المعجم الكبير، ۳۱۹/۱۰،حدیث: ۱۰۷۷۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तुम्हारा बेहतरीन दीन तक़्वा है

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : इल्म की फ़ज़ीलत इबादत की फ़ज़ीलत से बढ़ कर है और तुम्हारा बेहतरीन दीन तक़्वा है।

(المستدرک،کتاب العلم،باب فضل العلم۔۔۔الخ، ۲۸۲/۱،حدیث: ۳۲۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(31) पानी का इस्राफ़ गुनाह है

सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : مَنْ تَوَضَّأَ بَعْدَ الْغُسْلِ فَلَيْسَ مِنَّا या'नी जो गुस्ल करने के बा'द वुज़ू करे वोह हम से नहीं। (المعجم الكبير، ۲۱۳/۱۱،حدیث:۱۱۶۹۱)

गुस्ल करने के बा'द वुज़ू की ज़रूरत नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा ह़दीस से मा'लूम हुवा गुस्ल करने के बा'द वुज़ू की ज़रूरत नहीं रहती क्यूंकि गुस्ल में वुज़ू के आ'ज़ा भी धुल जाते हैं। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान फ़रमाती हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुस्ल के बा'द वुज़ू नहीं फ़रमाते।

(ترمذی،ابواب الطھارۃ،باب ماجاء فی الوضوء بعد الغسل، ۱۶۱/۱،حدیث: ۱۰۷)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : क्यूंकि ग़ुस्ल से पहले वुज़ू फ़रमा लेते थे वोह वुज़ू नमाज़ के लिये काफ़ी होता था, बल्कि अगर कोई शख़्स बिग़ैर वुज़ू किये भी ग़ुस्ल करे और फिर नमाज़ पढ़ ले तो जाइज़ है क्यूंकि त़हारते कुब्रा (या'नी ग़ुस्ल) के ज़िम्न में त़हारते सुग़रा (या'नी वुज़ू) भी हो जाती है और बड़े ह़दस के साथ छोटा ह़दस भी जाता रहता है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1/305)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वुज़ू में पानी का इस्राफ़ मकरूह है

आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं : वुज़ू में पानी का इस्राफ़ मकरूह है ख़्वाह नह्‌र का पानी हो या अपना ममलूक पानी हो, और जो पानी पाकी ह़ासिल करने वालों के लिये वक़्फ़ होता है, जिस में मदारिस का पानी भी शामिल है, इस का इस्राफ़ ह़राम है, इस की वज्ह येह है कि येह पानी उन्ही लोगों के लिये वक़्फ़ है जो शरई वुज़ू करना चाहते हैं, और दूसरों के लिये मुबाह़ नहीं है। (फ़तावा रज़विय्या, 2/483)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ماٰخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
کنز الایمان (ترجمۂ قرآن)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
الجامع لاحکام القرآن	ابو عبداللہ محمد بن احمد الانصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر بیروت
تفسیر مدارک	امام عبداللہ بن احمد بن محمود نسفی، متوفی ۷۱۰ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
تفسیر خازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	مصر
در منثور	امام جلال الدین عبدالرحمٰن بن ابوبکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۳۲ھ
تفسیر صاوی	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوفی، متوفی ۱۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
روح المعانی	ابو الفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ اردو بازار، لاہور
خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی، لاہور
صراط الجنان	شیخ الحدیث والتفسیر مفتی ابو صالح محمد قاسم القادری	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
صحیح البخاری	امام ابو عبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث، بیروت ۱۴۲۱ھ
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ
المسند	امام احمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
مصنف عبدالرزاق	امام ابوبکر عبدالرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ
سنن دارمی	امام حافظ عبداللہ بن عبدالرحمٰن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۰۷ھ
مسند بزار	امام ابوبکر احمد عمرو بن عبدالخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم، المدینۃ المنورۃ ۱۴۲۴ھ
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ

مستدرک	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ٤٠٥ھ	دارالمعرفہ بیروت ١٤١٨ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ٤٥٨ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢١ھ
مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ٧٤٢ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٤ھ
مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابوبکر ہیتمی، متوفی ٨٠٧ھ	دارالفکر، بیروت ١٤٢٠ھ
مسند ابویعلی	شیخ الاسلام ابویعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ٣٠٧ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٨ھ
جامع الاحادیث	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ٩١١ھ	دارالفکر بیروت ١٤١٤ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ٩١١ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٥ھ
جامع الاصول	امام مبارک بن محمد شیبانی المعروف بابن الاثیر جزری، متوفی ٦٠٦ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ١٤١٨ھ
کنزالعمال	امام علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ٩٧٥ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٩ھ
المطالب العالیہ	امام الحافظ احمد بن علی بن الحجر العسقلانی، متوفی ٨٥٢ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ١٤٢٤ھ
الاذکار	حافظ محی الدین ابوزکریا یحیی بن شرف نووی، متوفی ٦٧٦ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ١٤٢٠ھ
موسوعۃ امام ابن ابی الدنیا	حافظ امام ابوبکر عبداللہ بن محمد قرشی، متوفی ٢٨١ھ	مکتبۃ العصریہ بیروت ١٤٢٦ھ
الترغیب والترہیب	امام زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی منذری، متوفی ٦٥٦ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٨ھ
القول البدیع	الامام الحافظ محمد بن عبدالرحمٰن سخاوی، متوفی ٩٠٢ھ	مؤسسۃ الریان بیروت ١٤٢٢ھ
معرفۃ القراء الکبار	امام شمس الدین محمد بن احمد بن عثمان الذہبی ٧٤٨ھ	مؤسسۃ الرسالۃ، بیروت ١٤٠٤ھ
حلیۃ الاولیاء	امام ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی شافعی، متوفی ٤٣٠ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤١٩ھ
تاریخ دمشق	علامہ علی بن حسن، متوفی ٥٧١ھ	دارالفکر، بیروت ١٤١٥ھ
الحدیقۃ الندیۃ	سیدی عبدالغنی نابلسی حنفی، متوفی ١١٤١ھ	پشاور
شرح المقاصد	علامہ مسعود بن عمر سعدالدین تفتازانی، متوفی ٧٩٣ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٢ھ
عمدۃ القاری	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی، متوفی ٨٥٥ھ	دارالفکر، بیروت ١٤١٨ھ
شرح ابوداؤد للعینی	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی، متوفی ٨٥٥ھ	مکتبۃ الرشد، ریاض، ١٤٢٠ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرؤوف مناوی، متوفی ١٠٣١ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ١٤٢٢ھ
مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ١٣٩١ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، لاہور
درمختار	علاء الدین محمد بن علی حصکفی، متوفی ١٠٨٨ھ	دارالمعرفہ، بیروت ١٤٢٠ھ
فتاوی رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان، متوفی ١٣٤٠ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ١٤١٨ھ
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ١٣٦٧ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی

ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	شہزادۂ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
سیر اعلام النبلاء	امام شمس الدین محمد بن احمد ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۷ھ
حیاتِ اعلیٰ حضرت	ملک العلماء ظفر الدین بہاری، متوفی ۱۳۸۲ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
ادب الدنیا والدین	ابو الحسن علی بن محمد بن حبیب الماوردی، متوفی ۴۵۰ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۰۸ھ
لواقح الانوار القدسیۃ	ابو المواہب عبد الوہاب بن احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
منہاج القاصدین	ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷	دار التوفیق، دمشق ۱۴۳۱ھ
تنبیہ المغترین	عبد الوہاب بن احمد بن علی شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۹ھ
مثنوی (مترجم)	حضرت مولانا جلال الدین رومی، متوفی ۶۷۲ھ	خدیجہ پبلی کیشنز، لاہور
روض الریاحین	امام عبد اللہ بن اسعد الیافعی، متوفّٰی ۷۶۸ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفّٰی ۳۷۳ھ	دار الکتاب العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
غریب الحدیث للحربی	امام ابو اسحاق ابراہیم بن اسحاق الحربی، متوفی ۲۸۵ھ	دار المدنہ، جدہ ۱۴۰۴ھ
عیون الحکایات	ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
قوت القلوب	شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ	مرکز اہل السنۃ ۱۴۲۳ھ
احیاء العلوم	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت
المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح، متوفّٰی ۸۵۰ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۹ھ
کتاب التعریفات	علی بن محمد بن علی الجرجانی، متوفی ۸۱۶ھ	دار المنار
لسان العرب	محمد بن مکرم ابن منظور الافریقی، متوفّٰی ۷۱۱ھ	مؤسسۃ الاعلٰی للمطبوعات بیروت ۱۴۲۶ھ
امام اعظم کی وصیتیں	المدینۃ العلمیۃ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
اسلامی زندگی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
نیکی کی دعوت	مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
پردے کے بارے میں سوال جواب	مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
غیبت کی تباہ کاریاں	مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
فیضانِ سنت	مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
وسائلِ بخشش	مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی

फ़ेहरिस्त

एक चुप सौ सुख

यादुदाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

याददाश्त

दौराने मुत़ालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

ISBN 978-969-631-592-6
0126101
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6 ☎ 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात ☎ 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र ☎ 09022177997
❁ ह़ैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना ☎ (040) 2 45 72 786

Web : www.dawateislami.net / E- mail : maktabadelhi@gmail.com